दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियर: वर्ष:4 : अंक: 43 | ग्वालियर, रविवार 27 अक्टूबर 2024 | पृष्ठ: 8 मूल्य: 2 रुपए

यूपी में आधुनिक डेयरी इकाइयों की स्थापना करेगी सरकार, 'मिनी नंदिनी कृषक समृद्धि योजना' लॉन्च की

लखनऊ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने एवं गौ पालकों को सशक्त बनाने के लिए उन्हें बड़ी सौगात दी है। योगी सरकार मिनी नंदिनी कृषक समृद्धि योजना लॉन्च कर योजना के तहत प्रदेश में आधुनिक डेयरी इकाइयों की स्थापना करेगी। इससे दुग्ध उत्पादन की गुणवत्ता और मात्रा में सुधार होगा। इसके लिए योगी सरकार 1,015 लाख रुपये खर्च करेगी। योगी सरकार ने प्रति पशु दुग्ध उत्पादन के राष्ट्रीय औसत को बढ़ाने के लिए मिनी नंदिनी कृषक समृद्धि योजना की शुरुआत की है। दरअसल, उत्तर प्रदेश देश के प्रमुख दुग्ध उत्पादक राज्यों में से एक है, लेकिन प्रति पशु दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से राज्य राष्ट्रीय औसत से पीछे है। राज्य में वर्तमान में प्रति गाय औसतन 3.78 लीटर दूध का उत्पादन होता है, जो राष्ट्रीय औसत से कम है। वहीं, योजना के तहत योगी सरकार ने उच्च गुणवत्ता वाली स्वदेशी नस्लों की गायों का चयन कर हाइटेक डेयरी इकाइयों की स्थापना का निर्णय लिया है। योजना के जरिये 10 गायों की क्षमता वाली हाइटेक डेयरी इकाइयों की स्थापना की जाएगी। हर इकाई पर लगभग 23.60 लाख का खर्च आएगा, जिसमें सरकार और लाभार्थी दोनों का योगदान होगा। इन इकाइयों में केवल गिर, थारपारकर और साहीवाल जैसी उच्च गुणवत्ता वाली देशी नस्लों की गाय खरीदी जाएंगी, जिनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता अधिक होती है। योजना के तहत चुनी गई गायों की नस्ल का मूल्यांकन उनकी उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता के आधार पर किया जाएगा, जिससे अधिक दुग्ध उत्पादन सुनिश्चित हो सके। योजना के तहत कैटल शेड और अन्य आधारभूत संरचनाओं का निर्माण आधुनिक तकनीक से किया जाएगा। इन संरचनाओं में पफ पैनल का उपयोग किया जाएगा, जिससे मौसम के प्रतिकूल प्रभाव से पशुओं की सुरक्षा हो सकेगी और उनका स्वास्थ्य बेहतर रहेगा। इसके अलावा, गौ पालकों को आधुनिक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा, जिससे वे नए तकनीकी साधनों का उपयोग कर अपने पशुओं की देखभाल और प्रबंधन कर सकें। गौ पालन में तीन वर्ष का अनुभव रखने वाले योग्य किसानों का चयन किया जाएगा ताकि योजना का लाभ वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुंच सके। योजना से छोटे और सीमांत किसानों को सीधा लाभ होगा। साथ ही किसानों को वैज्ञानिक पद्धतियों से परिचित कराया जाएगा। इससे कम लागत में अधिक उत्पादन की संभावना बढ़ेगी। यह योजना सिर्फ दुग्ध उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य ग्रामीण समाज में सकारात्मक बदलाव भी लाना है। योजना के जरिए पशुपालकों को नए अवसर मिलेंगे, जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बन सकें।

एम्स के चिकित्सक अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी क्षमता से करेंगे : मुर्मु

रायपुर, एजेंसी। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को उम्मीद जताई कि एम्स से उत्तीर्ण चिकित्सक एवं पैरा मेडिकल छात्र इस जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व का निर्वहन पूरी तन्मयता और क्षमता के साथ करेंगे। श्रीमती मुर्मु आज यहां एम्स के द्वितीय दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए यह विचार व्यक्त किये। उन्होंने इस अवसर पर एम्स संस्थान के 10 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक एवं पदोपाधि तथा 514 विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मेडिकल प्रोफेशनल का कार्य अत्यंत जिम्मेदारी भरा होता है, उनके निर्णय जीवन रक्षा से जुड़े होते हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि यहां से उत्तीर्ण चिकित्सक एवं पैरा मेडिकल छात्र इस जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व का निर्वहन पूरी तन्मयता और क्षमता के साथ करेंगे। उन्होंने उपाधि एवं पदोपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके स्वर्णिम भविष्य की कामना की। राष्ट्रपति ने अपने उद्बोधन में आगे कहा कि जब आप सबने मेडिकल को अपना कार्यक्षेत्र चुना होगा, तो आपके मन में दया और संवेदना का भाव रहा होगा। आपको यह हमेशा याद रखना होगा कि दया, करुणा, संवेदना मानवीय मूल्य को मजबूत बनाते हैं। इसलिए हमेशा अपने कार्य क्षेत्र में इन जीवन मूल्यों के साथ कार्य करें। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि भारत सरकार देश के सभी नागरिकों को स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने के लिए प्रयास कर रही है। पिछले एक दशक में देशवासियों को यूनिवर्सल हेल्थ कार्ड प्रदान करने के लिए अनेक कदम उठाए गए। आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत बड़ी संख्या में नागरिक लाभान्वित हो रहे हैं। प्रधानमंत्री जन औषधि योजना से सस्ती और गुणवत्तापूर्ण दवाई उपलब्ध हो रही है।

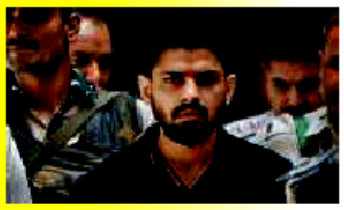

दिल्ली पुलिस को मिली बड़ी सफलता, लॉरेंस बिश्नोई गैंग के 7 शूटर्स को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने शुक्रवार को पंजाब और आस–पास के राज्यों समेत देश भर के कई इलाकों से लॉरेंस बिश्नोई गैंग से जुड़े सात शूटरों को गिरफ्तार किया। लॉरेंस बिश्नोई फिलहाल गुजरात के साबरमती की जेल में बंद है। वह पंजाबी गायक सिद्धू मूसे वाला की हत्या के मामले में मुख्य आरोपियों में से एक है। एडिशनल सीपी स्पेशल सेल प्रमोद कुमार कुशवाह ने बताया कि स्पेशल सेल की काउंटर इंटेलिजेंस टीम ने सात शूटरों को गिरफ्तार किया है। पहली गिरफ्तारी 23 अक्टूबर को दिल्ली से हुई थी

रितेश की गिरफ्तारी हुई थी। राजस्थान से सुखाराम नाम के शख्स को गिरफ्तार किया गया था। पंजाब के अबोहर और सिरसा से भी गिरफ्तारियां हुई हैं। एडिशनल सीपी स्पेशल सेल ने आगे बताया कि वे राजस्थान में सुनील पहलवान नामक व्यक्ति की हत्या की योजना बना रहे थे। उन्होंने दो बार रेकी भी की। उनके पास से एक जीपीएस ट्रैकिंग डिवाइस भी बरामद की गई है। उन्हें आरजे बिश्नोई से सीधे निर्देश मिल रहे थे, जो स्वतंत्र रूप से काम कर रहे हैं, लेकिन वे अतीत में लॉरेंस सिंडिकेट का हिस्सा रहे हैं। लक्ष्य के मामा राजनीतिक पृष्ठभूमि से हैं और उनका व्यवसाय भी है। इसका अभी तक बाबा सिद्दीकी हत्याकांड से कोई लेना–देना नहीं है। इससे पहले दिन में एनआईए ने लॉरेंस के भाई अनमोल बिश्नोई की गिरफ्तारी में मदद करने वाली सूचना देने वाले को 10 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की थी। अनमोल पिछले अप्रैल में मुंबई में अभिनेता सलमान खान के आवास के बाहर हुई गोलीबारी की घटना में कथित संलिप्तता के लिए एनआईए की जांच के घेरे में है और उसे एजेंसी की मोस्ट वांटेड सूची में शामिल किया गया है।

फारूक अब्दुल्ला ने पाकिस्तान से हिंसा रोकने, भारत के साथ मित्रता का रास्ता खोजने का किया आग्रह

श्रीनगर, एजेंसी। नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि गुलमर्ग जैसे हमले तब तक होते रहेंगे जब तक भारत और पाकिस्तान मित्रता का रास्ता नहीं खोज लेते। उन्होंने कहा कि ऐसा होने पर जम्मू कश्मीर की समस्याएं समाप्त हो जाएंगी। उत्तरी कश्मीर के बारामूला जिले में गुलमर्ग के पास बृहस्पतिवार को आतंकवादियों ने सेना के एक वाहन पर घात लगाकर हमला किया, जिसमें दो कुलियों और दो जवानों की मौत हो गयी थी। इस हमले में एक जवान और एक कुली घायल हो गए। अब्दुल्ला ने संवाददाताओं से कहा, "इस राज्य में ऐसे हमले होते रहेंगे। आप जानते हैं कि वे कहां से आते हैं और यह तब तक नहीं रुकेगा जब तक इस समस्या से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं मिल जाता। मैं पिछले 30 वर्ष से यह देख रहा हूं निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं।" उन्होंने कहा, "हम पाकिस्तान का हिस्सा नहीं बनने जा रहे हैं। तो फिर वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? हमारे भविष्य को बर्बाद करने के लिए? हमें गरीब बनाने के लिए?" पूर्ववर्ती जम्मू कश्मीर राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री अब्दुल्ला ने कहा कि केंद्र शासित प्रदेश में समस्या पैदा करने के बजाय पाकिस्तान को अपनी दुर्दशा पर ध्यान देना चाहिए और अपनी बेहतरी के लिए काम करना चाहिए। उन्होंने कहा, "वे खुद तो बर्बाद हो ही रहे हैं साथ ही हमें भी बर्बाद कर रहे हैं।" अब्दुल्ला ने पाकिस्तान से हिंसा रोकने और भारत के साथ दोस्ती का रास्ता तलाशने की अपील की। उन्होंने कहा, "अगर वे कोई रास्ता नहीं तलाशते हैं, तो भविष्य बहुत मुश्किल होगा।" नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष अब्दुल्ला ने बृहस्पतिवार के हमले में शहीद हुए दो सैनिकों के साथ ही मारे गए दो कुलियों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारत-जर्मनी की दोस्ती ने पकड़ी नई रफ्तार, कई समझौतों का हुआ आदान-प्रदान

पीएम मोदी बोले- हम शांति के लिए हर संभव योगदान देने को तैयार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज से शुक्रवार को मुलाकात की और उनसे भारत–जर्मनी की दोस्ती को गति देने वाले विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। इस दौरान भारत और जर्मनी ने दिल्ली के हैदराबाद हाउस में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज की उपस्थिति में समझौता ज्ञापनों और समझौतों का आदान–प्रदान किया। नवाचार और प्रौद्योगिकी पर रोडमैप और रोजगार और श्रम के क्षेत्र में एक संयुक्त घोषणापत्र पर समझौता ज्ञापन का आदान–प्रदान हुआ। इस दौरान मोदी ने कहा कि मैं चांसलर स्कोल्ज और उनके प्रतिनिधिमंडल का भारत में हार्दिक स्वागत करता हूं। मुझे खुशी है कि हमें पिछले 2 वर्षों में तीसरी बार भारत में आपका स्वागत करने का अवसर मिला है। मेरे तीसरे कार्यकाल की पहली आईजीसी बैठक अभी–अभी संपन्न हुई है। हम अभी सीईओ फोरम की बैठक से आ रहे हैं। इसी समय, जर्मन नौसेना का जहाज गोवा में बंदरगाह पर उतर रहा है और खेल जगत भी पीछे नहीं है। हमारी हॉकी टीमों के बीच मैत्रीपूर्ण मैच भी खेले जा रहे हैं। साथियों चांसलर स्कोल्ज के नेतृत्व में हमारी साझेदारी को नई गति और दिशा मिली है। उन्होंने कहा कि मैं जर्मनी की भारत पर ध्यान केंद्रित करने की रणनीति के लिए चांसलर स्कोल्ज को बधाई देता हूं। इसमें दुनिया के दो सबसे बड़े लोकतंत्रों के बीच साझेदारी को व्यापक तरीके से आधुनिक बनाने और आगे बढ़ाने का खाका है। महत्वपूर्ण और उभरती हुई प्रौद्योगिकी, कौशल, विकास और नवाचार में समग्र सरकारी पहल पर भी आम सहमति बनी है। इससे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर और स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग मजबूत और सुरक्षित होगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि हम दोनों ही अंतरराष्ट्रीय कानूनों के तहत हिंद–प्रशांत क्षेत्र में नौवहन की स्वतंत्रता पर सहमत हैं। हम दोनों इस तथ्य से सहमत हैं कि 20वीं सदी में स्थापित वैश्विक मंच 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम नहीं हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सहित सभी बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि रक्षा और सुरक्षा क्षेत्रों में बढ़ता सहयोग हमारे गहरे आपसी विश्वास का प्रतीक है। गोपनीय सूचनाओं के आदान–प्रदान पर समझौता इस दिशा में एक नया कदम है। आज संपन्न हुई पारस्परिक कानूनी सहायक संधि आतंकवाद और अलगाववादी तत्वों से निपटने के हमारे संयुक्त प्रयासों को मजबूत करेगी... यूक्रेन और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष हम दोनों के लिए चिंता का विषय हैं। भारत का हमेशा से मानना रहा है कि युद्ध से समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता और भारत शांति बहाली के लिए हर संभव योगदान देने के लिए तैयार है। इस दौरान मोदी ने कहा कि यूक्रेन और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष हम दोनों के लिए चिंता का विषय हैं। भारत का हमेशा से मानना रहा है कि युद्ध से समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता और भारत शांति बहाली के लिए हर संभव योगदान देने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि भारत की युवा शक्ति जर्मनी की समृद्धि और विकास में योगदान दे रही है। हम भारत के लिए जर्मनी की कुशल श्रम रणनीतियों का

मधु कोड़ा को एससी से बड़ा झटका, कोयला घोटाले में सजा पर रोक से इनकार, नहीं लड़ पाएंगे चुनाव

नई दिल्ली, एजेंसी। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा को झटका देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कोयला घोटाला मामले में उनकी सजा पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है। निचली अदालत द्वारा तीन साल की सजा काट रहे कोड़ा ने आगामी राज्य विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए अपनी सजा पर रोक लगाने की मांग की थी। कोड़ा ने दिल्ली उच्च न्यायालय के पिछले फैसले के

खिलाफ अपील की थी, जिसमें उनकी सजा पर रोक लगाने की याचिका को खारिज कर दिया गया था, ताकि वे चुनाव लड़ सकें। उच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया था कि यह अनुरोध निराधार था, क्योंकि इसमें सिर्फ कोड़ा के चुनाव लड़ने की योग्यता पर ही ध्यान केंद्रित किया गया था। कोड़ा को दिसंबर 2017 में भ्रष्टाचार विरोधी कानून के तहत दोषी ठहराया गया था, जो 2006 से 2008 तक राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान कोलकाता स्थित विनी आयरन एंड स्टील लिमिटेड को कोयला ब्लॉक के आवंटन से संबंधित एक मामले में दोषी ठहराया गया था। दिल्ली की एक विशेष सीबीआई अदालत ने कोड़ा को तीन साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई थी। दिल्ली उच्च न्यायालय ने 18 अक्टूबर को कोड़ा की उस प्रार्थना को अस्वीकार कर दिया था जिसमें उन्होंने सजा पर रोक लगाने का अनुरोध किया था ताकि वे 13 और 20 नवंबर को दो चरणों में होने वाले झारखंड विधानसभा चुनावों में नामांकन पत्र दाखिल कर सकें।

संजय राउत को बड़ी राहत, मानहानि के मामले में कोर्ट से मिली जमानत

मुंबई, एजेंसी। मुंबई की एक सत्र अदालत ने आज शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत बड़ी राहत दी है। अदालत ने संजय राउत को एक मानहानि के मामले में जमानत दे दी है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता किरीट सोमैया की पत्नी मेधा सोमैया द्वारा दायर मानहानि के मामले में अपनी दोषसिद्धि को चुनौती दी थी। राउत ने सत्र न्यायालय में अपनी दोषसिद्धि और मजिस्ट्रेट अदालत द्वारा दी गई 15 दिन की जेल की सजा के खिलाफ पुनरीक्षण याचिका दायर की है। राज्यसभा सदस्य शुक्रवार को अदालत में पेश हुए और जमानत मांगी। अदालत ने उन्हें 50,000 रुपये की जमानत दी। न्यायिक मजिस्ट्रेट (प्रथम श्रेणी) आरती कुलकर्णी ने 26 सितंबर को राउत को भारतीय दंड संहिता की धारा 500 के तहत मानहानि का दोषी ठहराया। उन्हें 15 दिन की जेल की सजा सुनाने के अलावा अदालत ने उन पर 25,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया। मेधा सोमैया ने दावा किया था कि राउत ने मीडिया में उनके और उनके पति के खिलाफ निराधार और मानहानिकारक आरोप लगाए, जिसमें उन पर मीरा भयंदर नगर निगम क्षेत्र में सार्वजनिक शौचालयों के निर्माण से संबंधित 100 करोड़ रुपये के घोटाले में शामिल होने का आरोप लगाया गया।

आतंकी हमलों को लेकर राहुल गांधी ने केंद्र पर साधा निशाना, बोले-

विफल रहीं एनडीए सरकार की नीतियां

नई दिल्ली, एजेंसी। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को जम्मू एवं कश्मीर में आतंकवादी हमलों की बढ़ती घटनाओं को लेकर नरेंद्र मोदी सरकार की आलोचना की। हिंदी में एक्स पर एक पोस्ट में गांधी ने आरोप लगाया कि एनडीए सरकार की नीतियां जम्मू–कश्मीर में सुरक्षा और शांति स्थापित करने में विफल रही हैं। राहुल ने लिखा कि गुलमर्ग, जम्मू–कश्मीर में सेना के वाहन पर हुए कायराना हमले में हमारे वीर जवानों की शहादत का समाचार अत्यंत दुखद है। हमले में दो पोर्टर्स ने भी अपनी जान गंवा दी। शहीदों को नमन करता हूं और सभी शोकाकुल परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि केंद्र की एनडीए सरकार की नीतियां जम्मू–कश्मीर में सुरक्षा और शांति स्थापित करने में पूरी तरह से विफल रही हैं। उनके दावों के विपरीत, हकीकत यह है कि प्रदेश निरंतर आतंकी गतिविधियों, हमारे जवानों पर हमलों और नागरिकों की लक्षित हत्याओं के कारण खतरे के साए में जी रहा है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि सरकार को तुरंत जवाबदेही लेनी चाहिए और जल्द से जल्द वादी में अमन बहाल कर सेना और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। जम्मू–कश्मीर के बारामूला जिले में गुरुवार को आतंकवादियों द्वारा सेना के वाहनों पर घात लगाकर किए गए हमले में दो सैनिक और दो नागरिक मारे गए। अधिकारियों के अनुसार राष्ट्रीय राइफल्स इकाई के कर्मियों और नागरिक कुलियों को लेकर एक काफिला अफरावत रेंज में नागिन चौकी की ओर बढ़ रहा था, तभी आतंकवादियों ने पर्यटन केंद्र गुलमर्ग से लगभग 6 किमी दूर बोटापथरी में सेना के दो ट्रकों पर गोलीबारी की। 24 अक्टूबर को कश्मीर के गंदेरबल जिले में छह गैर–स्थानीय मजदूरों और एक स्थानीय डॉक्टर समेत सात लोगों की हत्या कर दी गई थी। यह क्रूर आतंकी हमला तब हुआ जब आतंकवादियों ने जेड–मोड़ सुरंग निर्माण स्थल पर पीड़ितों पर गोलियां चलाईं। 18 अक्टूबर को बिहार के एक मजदूर को शोपियां जिले में आतंकवादियों ने गोली मार दी थी। गोलियों से छलनी उसकी लाश जैनापोरा के वाची इलाके में एक खेत में पड़ी मिली थी।

अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय में रसायन विभाग द्वारा प्रमाण पत्र कोर्स का शुभारंभ

अम्बाह,अम्बाह स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रसायन विभाग द्वारा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों के लिए प्रमाण पत्र कोर्स का शुभारंभ किया गया। इस कोर्स में रसायन के महत्व एवं दैनिक जीवन में इसकी उपयोगिता को समझाने के उद्देश्य से सन फार्मा लिमिटेड, मालनपुर - ग्वालियर से श्री डी.एस. तोमर का प्रारंभ मां सरस्वती के दीप प्रज्वलन एवं आशीर्वाद के साथ हुआ। अतिथि परिचय और स्वागत के बाद डॉ. रामकिशोर उपाध्याय ने विभागाध्यक्ष डॉ. बी.के. जैन को आमंत्रित किया। डॉ. जैन ने इस प्रमाण पत्र कोर्स की आवश्यकता को विस्तार से और श्री योगेश उपाध्याय ने उपस्थिति दर्ज कराई।कार्यक्रम समझाया और बताया कि विभाग द्वारा पूर्व में विश्लेषणात्मक रसायन एवं डेयरी रसायन जैसे विषयों पर भी प्रमाण पत्र कोर्स आयोजित किए गए हैं, जिनके माध्यम से कई विद्यार्थियों ने फार्मा इंडस्ट्री में रोजगार प्राप्त किया है। रसायन विभाग इंडस्ट्रीज के साथ रूह के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करने हेतु प्रयासरत है।इस अवसर पर श्री योगेश उपाध्याय ने विद्यार्थियों को रसायन विषय को गहराई से समझने की आवश्यकता बताई, वहीं श्री तोमर ने छात्राओं को फार्मा इंडस्ट्री में मिलने वाले अवसरों का लाभ उठाने का सुझाव दिया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. व्ही. मेढेकर ने प्रमाण पत्र कोर्स की सफलता की कामना करते हुए विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दीं और अतिथियों का आभार व्यक्त किया।आभार प्रदर्शन प्रो. मुकेश श्रीवास द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में डॉ. रमाकांत शर्मा एवं श्रीमती रेखा करोरिया का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

बुंदेलखण्ड आर्मी(न्यास)के संस्थापक अध्यक्ष कपिल वाल्मीकि ने जिलाधिकारी को दिया एक ज्ञापन

झांसी की रानी वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई की धरोहर झरना गेट को बचाया जाये

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोट
पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

बुन्देलखण्ड आर्मी न्यास आपको अवगत कराना चाहता है कि वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई कर्मभूमि झांसी एक ऐतिहासिक नगर है और यह ऐतिहासिक नगर झांसी वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई के समय से ही कई दरवाजों, खिड़कियों और गेटों के अन्दर बसा हुआ था और इन्हीं दरवाजो, खिड़कियों को अंग्रेजों के साथ लड़ाई के समय पर जनता की सुरक्षा के लिये बन्द कर दिये जाते थे और इन्हीं गेटो, दरवाजों, खिड़कियों ने अन्दर आने से रोका था और अंग्रेजों के तोपों के गोलों व बन्दूकों की गोलियों को रोककर हमारे पूर्वजों व झांसी की जनता की रक्षा की थी। पुराने समय से लेकर आज तक झांसी नगर में बहुत बदलाव हो चुका है। पुराने समय की झांसी इन्हीं दरवाजों के अन्दर बसी हुई थी लेकिन वर्तमान समय की झांसी एक विशाल रूप ले चुकी है और ये सभी पुराने दरवाजे झांसी नगर के बीचों बीच है। पुराने समय से लेकर आज तक इन्हीं दरवाजों, खिड़कियों गेटो के नाम नगर के प्रमुख स्थानों को आज भी जाना जाता है। वर्तमान समय में कुछ दरवाजों का सौदर्गीकरण हो चुका है और कुछ दरवाजे गिरने की कगार पर है इन सभी दरवाजों में से एक झरना गेट है जो गिरने की कगार पर है जो झांसी दुर्ग के सबसे नजदीक है और आबादी के बीचों बीच है झरना गेट के पास प्राचीन शनिदेव मन्दिर कई प्राचीन मन्दिर झांसी महोत्सव ग्राउण्ड वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई पार्क, मैथलीशरण गुप्ता पार्क, जनरल विपिन रावत पार्क, झांसी म्यूजियम और भी कई प्रमुख स्थान बने हुये है हजारों लोग झरना गेट के नीचे से निकलते है जिससे कभी भी कोई भी हादसा हो सकता है।अतः महोदय जी वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई की धरोहर झरना गेट को बचाया जाये और झरना गेट का सौंदर्गीकरण कराया जाये।

नेहरू युवा केन्द्र ने एक सैकड़ा युवाओं को नशीली दवाओं के विरुद्ध किया जागरुक

जनपद पंचायत के सभागार में हुई नशीली दवाओं के विरुद्ध शिक्षा ,जागरुकता कार्यशाला आयोजित|, वक्ताओं ने बताए नशे के दुष्परिणाम, नशा न करने की दिलाई शपथ

।अम्बाह। भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय नेहरू युवा केन्द्र संगठन मुरैना ने अम्बाह जनपद पंचायत के सभागार में कार्यशाला आयोजित कर एक सैकड़ा युवाओं को नशीली दवाओं के विरुद्ध जागरुक किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जनपद पंचायत अम्बाह की मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती सुमन चक चौहान थीं। अध्यक्षता नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक ओएसडी राकेश सिंह तोमर ने की । विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ.पूर्णिमा अग्रवाल, रासेयो अधिकारी विजय शर्मा, आनंदम विभाग के जिला समन्वयक बाल कृष्ण शर्मा, बालिका छात्रावास की अधीक्षिका सुमन राठौर, कार्यक्रम पर्यवेक्षक दिलीप सुमन,समाजसेवी विशन सिंह तोमर, राजकुमार तोमर, पत्रकार भीमसेन तोमर, शिक्षक राम सेवक शर्मा मौजूद रहे। कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए मुख्य अतिथि श्रीमती चौहान ने कहा कि नशा करने से शारीरिक हानि के साथ -साथ धन की भी हानि होती है। नशे के कारण रोज -रोज होने वाली पारिवारिक कलह की वजह से महिलाएं और बच्चे घरेलू हिंसा का शिकार होते हैं। जिससे बच्चों का भविष्य और पारिवार का विकास रुक जाता है । अतः हम सभी स्वयं नशीली वस्तुओं के सेवन से दूर रहें तथा अपने परिवार, मित्रों रिश्तेदारों और पडौसियों को भी नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करें। राज्य निदेशक राकेश सिंह तोमर ने कहा कि युवा किसी भी राष्ट्र और समाज के विकास की मुख्य धुरी होते हैं। इसलिए युवाओं को नशे से दूर रखना आवश्यक है । क्योंकि नशा समस्त बुराइयों की जड़ है जो विकास को अवरूद्ध करता है। कार्यक्रम में मौजूद अन्य वक्ताओं ने भी अपने -अपने विचार रखे।

गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती / विशेष अन्याय और असत्य के विरुद्ध विद्यार्थी जी की आग बरसाने वाली पत्रकारिता की मशाल कभी मन्द नहीं हुई ...

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट
पुष्पांजलिटुडे

ललितपुरललितपुर । हिन्दी पत्रकारिता के पितामहा गणेशशंकर विद्यार्थी जी जयंती पर आयोजित एक परिचर्चा को संबोधित करते हुए नेहरू महाविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो. भगवत नारायण शर्मा ने कहा कि महान साहित्यसृष्टा तथा हिन्दी पत्रकारिता के तपते सूर्य गणेश शंकर विद्यार्थी के शब्द गुलामी के गाल पर झन्नाटेदार तमाचे की तरह पड़ते थे । विरासत में तिलक और गांधी से मिली अन्याय और असत्य के विरुद्ध आग बरसाने वाली पत्रकारिता की मसाल लेकर चलने वाले विद्यार्थी जी की जोशीली ललकार सर्वत्र दिखाई देती है । यहाँ तक कि अपने प्रताप अखबार में सह संपादक की नौकरी चाहने वालों के लिए अपने रिक्ति विज्ञापन का प्रारूप भी वे इस तरह छापते हैं - दो वक्त का भोजन । साल के दो कुर्ते । दो धोतियां तथा सदा एक पैर जेल में रहने की स्थिति जिसे

मंजूर हो , आवेदन करे । उक्त विज्ञापन को पढ कर सरदार भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद नेअपनी दरख्वास्त लगाई और सहर्ष उनका चयन कर लिया गया ।अखबार का दफ्तर क्रान्तिकारियों के लिए भारत माता मंदिर तीर्थ बन गया । विद्यार्थी जी की शहादत पर स्वाधीनता संग्राम के महानायक गांधी जी ने कहा था , ऐसा सौभाग्य मैं चाहता हूँ । मुझे इस बहादुर सपूत से इसीलिए ईष्या हो रही है । समाचार पत्र का लक्ष्य अन्याय के साम्राज्य से छुटकारा दिलाना है ।प्रत्येक मनुष्य जो लाचारी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है, उसे तोड़ फेकनें की झनझनाहट अखबारों के स्तम्भों के शब्दों से सुनाई देती रहना चाहिए । आज अखबारों की स्याही और इलेक्ट्रानिक मीडिया के बिजली से आलोकित अक्षरों के कारण मीडिया का चौथा खम्भा इतना शक्तिशाली हे चुका है कि यदि जनमत को अन्य तीन खम्भे किंचित झपकी भरते नजर आ भी जायें तो उन्हें पल भर में जगाते देर नहीं लगती । संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के लिए विद्यार्थी जी का प्रदेय ध्रुवतारे की तरह सघन अंधकार के मध्य अपना ऐसा आलोक बिखेर रहा है कि अनौचित्य के बादल सत्य के सूर्य को और ज्यादा देर तक ढके नहीं रह सकते । इलाहाबाद में सरस्वती और अभ्युदय के कार्यालय में बैठकर या कानपुर में प्रताप अखबार के लिए , उनकी कलम से जो शब्द फूल की तरह झरे या अंगारे बनकर बरसे , वे कभी निर्जीव नहीं रह सकते हैं । भारत शब्दों को ब्रह्म मानता है । साहित्य निर्माता होने के नाते उनके शब्द ब्रह्म जैसी व्यापकता और गहराई के कारण पत्रकारिता विज्ञान के लिए सदा सार्व-देशिक रहेंगे ।

रूसी क्रान्तिदर्शी कवि माया कोवस्की का यह कथन विद्यार्थी जी पर एकदम सटीक बैठता है कि ÷ किसी कलमकार की ताकत इसलिए मत आंको कि भविष्य में लोग , हिचकियों के साथ उसे याद करते हैं , नहीं , आज भी उसका एक शब्द , एक आलिंगन है , और एक नारा , और एक संगीन , और एक कोड़ा ÷ ।

संधारण कार्य के चलते 5 घंटे बिजली रहेगी बंदथरा डीसी से संबंधित दो दर्जन गांव रहेंगे प्रभावित|

अंबाह।दिनाक 27.10.2024 रविवार को 33 द्य1 थरा पर संधारण कार्य होने के कारण फीडर की विद्युत सप्लाई सुबह 11ः00 बजे से शाम 4ः00 बजे तक त क बंद रहेगी जिसमें निम्न क्षेत्र की विद्युत सप्लाई बाधित रहेगी जैसे थरा, नावली, चौकवान का पुरा, सेथरा, किशनपुरा, जल का नगरा, रूपाहटी, पलना, लाल जीत का पुरा, सिंह पुरा, किराच , , नीलम की घड़ी खजूरी जालोनी चिरपुरा दोहरी दोहरा खदरा माता का पुरा करौली माता रोड पलना पृथ्वी पुरा नीलम की घड़ी भोनपुरा चंदोखर धीरबल का पुरा मोतीपुराआदि क्षेत्र की विद्युत सप्लाई बाधित रहेगी कार्य के अनुसार समय को घटाया या बढ़ाया जा सकता है।

श्री आई माताजी का रथ का ग्रामीणों ने किया बधावणा बैल रथ के दर्शन कर खुशहाली की कामना

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

रानी-गोड़वाड़ री धन्य धरा जिला मुख्यालय पाली तहसील रानी ग्राम पंचायत घेनरी श्री आई माताजी का मंदिर (बडेर) गांव घेनरी श्री आई माता जी का धर्म रथ भैल धर्म प्रचार भ्रमण पर पधारे गांव के कोटवाल जमादारी समस्त पंचो री सहमती से विक्रम संवत् 2081 मिती कार्तिक बदी नवमी कृष्ण पक्ष शुक्रवार दिनांक 25 अक्टूबर को गाजे बाजे के साथ भव्य बधावा किया गया। महिलाओं ने माताजी की बैल (आस्था का रथ) का तीलक कर मंगल गीत गाए। लोगो ने पुष्प वर्षा कर संत मंडली का स्वागत किया। माताजी के बैल रथ के साथ पधारे जति पुना महाराज, खेता महाराज,राजेंद्र पंवार, बाबूलाल परिहार, शंकर हाम्बड,रतनलाल राठौड़, जेठाराम सोलंकी का कोटवाल सेसाराम लचेटा,जमादारी गमनाराम चोयल एवं मुख्य पुजारी तेजाराम लचेटा और ग्रामीणों ने स्वागत किया। आयोजित धर्म सभा में रतन लाल राठौड़ ने धर्म व संस्कार पर प्रवचन दिए।

चंदेरा पुलिस ने पैसे मांग कर मारपीट करने वाले फरार आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा

विवेक राय की रिपोर्ट

श्रीमान् पुलिस अधीक्षक महोदय टीकमगढ श्री मनोहर सिंह मंडलोई जी के निर्देशन में, श्रीमान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय श्री सीताराम ससत्या जी एवं एसडीओपी जतारा श्री अभिषेक गौतम जी के मार्गदर्शन में थाना चंदेरा में पजींबध्द अपराध क्र 150/24 धारा 296,115(2), 119(1), 351(2), 3(5) बीएनएस के पिछले दो माह से फरार चल रहे आरोपी नारायण उर्फ नत्थु पिता रन्चु यादव उम्र 37 साल निवासी महेबा चक्र 3 को दिनांक 26/10/24 गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय जतारा मे पेश किया गया ।उक्त कार्यवाही में उनि नीतू खटीक थाना प्रभारी चंदेरा, सउनि रामपाल सिंह परिहार चौकी प्रभारी जेवर, प्रधान आर.407 रामचंद्र नायक, आर. 170 काशीराम, आर. 711 मोहित, आर.566 योगेन्द्र, आर. 713 गणेश, आर., 715 कपिल, म.आर 663 अंकिता ,म.आर. 432 रुचि की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

वरिष्ठ समाजसेवी थापक को शोक

अंबाह। थरा गांव के वरिष्ठ समाजसेवी और सभी लोगों के शुभ चिंतक हरिओम थापक जी राधा रानी के परम भक्त थे हैं थापक जी के बड़े भाई संतोष थापक की पत्नी व थापक की भाभी जी का देहांत होने से पाठक के घर व परिवार में शोक लहर है

मुकुट मेमोरियल पब्लिक स्कूल दबोह में मनाया गया रंगोली महोत्सव

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- भारत की प्राचीन परम्परा के अनुसार अच्छे भाग्य व समृद्धि का प्रतीक ÷रंगोली÷ बनाकर कुछ खास अंदाज में बच्चों ने एक दूसरे को दीपावली की बधाई व शुभकामनाएं दी तथा एक दूसरे के लिए खुशियां प्यार व समृद्धि की कामना की।दीपावली जैसे पावन पर्व के इस अवसर पर बच्चों ने बहुत ही खूबसूरत तरीके से मिट्टी के दिये सजाकर बुराई पर अच्छाई की जीत व अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का संदेश प्राप्त किया।इस कार्यक्रम में विद्यालय के संचालक अभिषेक सिंह परिहार(रॉकी)व प्रधानाध्यापक नरेन्द्र कुमार मिश्रा व समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

सिंधिया कन्या विद्यालय में 68वाँ खेल समारोह 27 अक्टूबर को

सिंधिया कन्या विद्यालय में 68वाँ खेल समारोह 27 अक्टूबर को मनाया जाएगा। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में सुश्री पूजा सिहाग उपस्थित रहेंगी । सुश्री पूजा सिहाग ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी अविश्वसनीय उपलब्धियों से भारत को गौरवान्वित किया है। वह 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में कांस्य पदक विजेता हैं, आप 76 किलोग्राम श्रीमेन कैटेगोरी में प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। उसी वर्ष, आपने सीनियर विश्व चैंपियनशिप में एक और कांस्य पदक जीतकर अपनी उपलब्धियों में इजाफा किया। सुश्री पूजा ने एशियाई कुश्ती चैंपियनशिप में छह बार पदक जीतने और अंतरराष्ट्रीय मंच पर 30 बार भारत का प्रतिनिधित्व करने के साथ अपनी उल्लेखनीय क्षमता और निरंतरता का प्रदर्शन किया है। आपने 15 बार भारत केसरी का खिताब अर्जित किया है।

नगर पालिका परिषद एवं बिजली विभाग के बीच बड़ा टकराव

पंकज त्रिपाठी ब्यूरो चीफ
दैनिक पुष्पांजली टुडे

मप्र रा. स. कर्मचारी आयोग के पूर्व सदस्य सुनील वाल्मीकि ने बिजली विभाग के महाप्रबंधक पी.के.जैन के खिलाफ पुलिस अधीक्षक को सौपा आवेदन पत्रनगर पालिका परिषद ने सभागार में प्रेस वार्ता कर बिजली विभाग पर लगाए कई गम्भीर आरोप

भिण्ड । नगर पालिका परिषद द्वारा नपा सभागार में प्रेस वार्ता आयोजित की गई।परिषद द्वारा प्रेस कांफ्रेंस में बताया गया है,कि नगर पालिका परिषद ने पुलिस अधीक्षक को आवेदन पत्र सौपकर पी. के जैन महाप्रबंधक बिजली विभाग के खिलाफ एफ.आई.आर दर्ज करने व सीताराम बाल्मीक को मुआवजा देने की मांग की है।परिषद ने कहा कि नगर पालिका भिंड की लाइट बिना नोटिस दिये एंव पानी पम्प की लाइट बिजली विभाग के कर्मचारियों द्वारा काट दी गई है,जिससे शहर के आम जन को बहुत परेशानी हो रही है,इस संबंध में पार्षदो द्वारा बिजली विभाग से चर्चा के दौरान बिजली विभाग के अधिकारियों द्वारा अभद्रता का व्यवहार किया गया । जगह- जगह शहर में बिजली की केवल टूटी एंव डी.पी खुली हुई है,जिससे आम जन को हमेशा जान का खतरा बना रहता है,सीताराम बाल्मीकि पुत्र तेज सिंह की मृत्यु खुली हुई डी.पी के कारण हुई है,उसका मुआवजा बिजली कम्पनी द्वारा अभी तक नही दिया गया है। परिषद ने प्रशासन व पुलिस प्रशासन को चेतावनी देते हुए कहा कि अगर 3 तीन दिवस के अंदर कोई कार्यवाही नही होती है,तो समस्त सफाई व पम्प कर्मचारी एंव अन्य समस्त नगरपालिका कर्मचारी गण हडताल करेंगे जिसकी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी ।परिषद ने बताया कि मध्यप्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी लि. भिण्ड द्वारा नगर पालिका परिषद भिण्ड के जल प्रदाय पम्प देयकों के बिल जो निम्न हैं।माह अप्रैल 2024 कुल राशिरु. 22,81,575/- माह मई 2024 कुल राशि रु. 12,76.095/-माह जून 2024 कुल राशिरु. 13.03,681/- माह जुलाई 2024 कुल राशि रु. 25,45,801/-माह अगस्त 2024 कुल राशिरु. 14.33.071/- माह सितम्बर 2024 कुल राशिरु. 21,80,088/- माह अक्टूबर 2024 कुल राशिरु. 24,96,042/- योग रु. 1,35,16,353/- स्ट्रीट लाइट बिल कुल देय राशि -रु.52,96,630/- रु.1,88,12,983/- म.प्र.म.क्षे.वि.वि. को नगरपालिका भिण्ड के अकाउन्ट (ओटोकट) से भुगतान की गई राशि रु. 1,74,95,000/- माह अक्टूबर 2024 की स्थिति में भुगतान हेतु देय शेष राशिः रु. 13,17,983/- नगरपालिका भिण्ड पर विद्युत वितरण कपनी की शेष राशि मात्र 13,17,983/- रुपये है। इसके उपरान्त भी नगरपालिका का विद्युत वितरण कंपनी में 2 करोड़ 49 लाख भुगतान अभी तक अवेय बताया जा रहा है। यानि उल्टा चोर कोतवाल को डांटे जैसी नौबत नगरपालिका भिण्ड के साथ विद्युत वितरण कम्पनी कर रहा है।विगत 6 माह में विद्युत वितरण कंपनी द्वारा नगरपालिका के संचालित 52 पम्प हाउस का बिल 1 करोड़ 35 लाख 16 हजार 353 बिल जो एक पम्प का 2,59,929/- बिल हुआ है। अतः एक पम्प का लगभग एक माह का 44,000/- रूपये देय है। यह बिल मी. आंकलित अनुमानित है,जो क्षमता से काफी अधिक होकर अवैध है।नगर पालिका भिंड कार्यालय का बिल विगत एक माह का बिल 2 लाख 29 हजार का बकाया है,जो कि अवैध है। दिनांक 26/10/2024 को समय दोपहर 3.32 पर मीटर रीडिंग से जब रीडिंग वेरीफाई की गई तो 1150.6 देखी गई। इसे एक माह की भी मान लें तो विगत माह का बिल अवैध होकर अदेय है,जो कि म.प्र.मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी द्वारा 2.29.281/- का दिया गया ।सीवर ट्रीटमेन्ट प्लान्ट का बिल 84.47,665/- विद्युत वितरण कंपनी भिण्ड द्वारा नगर पालिका भिण्ड को थमाया गया है,जो सीवर ट्रीटमेन्ट का भुगतान करना है,जिसे नगर पालिका भिंड के ऊपर थोपा जा रहा है और इसके उपरांत एक वर्ष का 84,476,55/- मानकों के अनुरूप अवैध है,जो आंकलित सिद्ध होता है, और नगरपालिका से अवैध बसूली की तरह बसूलना चाहते हैं,जिसे एम.पी.यू.डी.सी. देय होगी इसलिए यह बिल नगरपालिका देयक नहीं करेगी और निराधर है।

मध्यप्रदेश विद्युत वितरण कम्पनी लि. भिण्ड द्वारा नगरपालिका को सर्किट हाउस भिण्ड का बिल भी थमाया गया है जो कि नगरपालिका जिसे नगरपालिका भिण्ड भुगतान हेतु बाध्य नहीं है।बैठक में मुख्य रूप से नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि एवं मप्र राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के पूर्व सदस्य सुनील वाल्मीकि,नपा उपाध्यक्ष भानू प्रताप सिंह भदौरिया, नेता प्रतिपक्ष राहुल सिंह राजावत, बड़े कुशवाह,ओमप्रकाश अग्रवाल बाबूजी,मनीष,पार्षद प्रतिनिधि अमित चौधरी,मनोज जैन सहित लगभग एक दर्जन पार्षद एवं उनके प्रतिनिधि व कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

संपादकीय

धान की पीड़ा

पंजाब में धान की भरपूर पैदावार के बाद किसानों का हैरान–परेशान होना व्यवस्था की विसंगतियों व तंत्र की नाकामी को ही दर्शाता है। राज्य की अनाज मंडियों में ध ान बहुतायत में पड़ा होना न केवल खरीद एजेंसियों की अक्षमता को दर्शाता है बल्कि केंद्र और राज्य सरकारों में व्यावहारिक तालमेल न होना भी बताता है। जिसके चलते विपणन से जुड़े हितधारक विरोध जता रहे हैं। विडंबना देखिए कि किसान खून–पसीने से उगायी फसल को भी समय पर नहीं बेच पाने से परेशान हैं। किसान धीमी खरीद प्रणाली से चिंतित हैं। वहीं चावल मिल मालिकों की दलील है कि उनके पास अतिरिक्त भंडारण की क्षमता नहीं है। दूसरी ओर धान की खरीद से जुड़े आढ़ती अपने कमीशन को बढ़ाए जाने की मांग कर रहे हैं। निश्चित रूप से ये हालात किसानों को परेशान करते हैं और खरीद प्रणाली में सुधार की जरूरत को बताते हैं। विडंबना है कि यह सारा हंगामा एक ऐसी फसल को लेकर हो रहा है, जिसको उगाने में प्रयुक्त पानी ने राज्य में एक गंभीर जल संकट को जन्म दे दिया है। वजह है धान की फसल की पैदावार बढ़ाने के लिये भूजल का अंधाधुंध दोहन। फलतरू राज्य का एक बड़ा इलाका मरुस्थलीकरण की ओर उन्मुख है। ऐसे में स्वाभाविक सवाल उठता है कि पंजाब आखिर कब तक धान की खेती के जरिये अपने इन अनमोल प्राकृतिक संसाधनों का निर्यात करता रहेगा? इसमें दो राय नहीं है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी पर सुनिश्चित खरीद पंजाब के धान उत्पादकों को केंद्रीय पूल में अधिक अनाज के योगदान के लिये प्रेरित करती रही है। निस्संदेह, हरित क्रांति के बाद देश की खाद्य सुरक्षा शृंखला को मजबूत बनाने में पंजाब का बड़ा योगदान रहा है। जिसके चलते देश खाद्यान्न संकट व कुपोषण के अभिशाप से किसी हद तक मुक्त हो सका है। जबकि एक हकीकत यह भी है कि यह फसल पंजाब का मुख्य भोजन नहीं रही है।निश्चित तौर पर केंद्र व राज्य सरकार को तालमेल बनाकर इस संकट के समाध ान की दिशा में गंभीर प्रयास करना चाहिए। वहीं दूसरी ओर प्रदेश में लबालब भरे अन्न भंडार राज्य की अपेक्षाओं और केंद्र की आवश्यकताओं के बीच तालमेल के अभाव को दर्शाते हैं। विडंबना देखिये, इसी धान के उत्पादन का एक प्रतिप्रभाव यह भी है कि पंजाब के हिस्से में प्रदूषण बढ़ाने वाला पराली दहन का आक्षेप आता है। जिसे उत्तर क्षेत्र में अक्तूबर–नवंबर में बढ़ने वाले वायु प्रदूषण का प्रमुख घटक बताया जाता रहा है। जबकि हकीकत यह है कि एक तो किसानों को पराली निस्तारण का कारगर विकल्प केंद्र व राज्य सरकारें नहीं दे पायी हैं। वहीं दूसरी ओर किसानों के पास रबी की फसलों की बुआई के लिये अधिक समय नहीं बचा होता। जिसके चलते उनको पराली जलाने के अलावा दूसरा कारगर विकल्प नजर नहीं आता। बहरहाल, इस चौतरफा संकट के बीच यह स्पष्ट हो गया है कि पंजाब में धान की खेती की समाप्ति के लिए चरणबद्ध तरीके से बहुप्रचारित फसल विविध ीकरण योजना को अविलंब लागू किया जाना चाहिए। इस योजना के क्रियान्वयन में देरी कई तरह के संकटों को बढ़ावा ही देगी। यह एक हकीकत है कि लंबे समय तक किसानों का धान की ही खेती करना, राज्य के लिये घातक ही साबित होगा। ऐसा लगता है कि केंद्र सरकार ने तीन विवादास्पद कृषि कानूनों के खिलाफ किसानों के साल भर चले आंदोलन से कोई सबक नहीं सीखा। हालिया घटनाक्रम से किसानों की वह आशंका बलवती हो रही है कि केंद्र सरकार लंबे समय तक धान की खरीद को जारी नहीं रखना चाहती। दरअसल, कुछ चुनिंदा फसलों के लिये ऊंची एमएसपी की घोषणा अन्य फसलों के उत्पादन के लिये किसानों को प्रेरित करने हेतु पर्याप्त नहीं है। जितनी जल्दी हो सके, केंद्र सरकार को मक्का और दाल जैसी फसलों की एमएसपी पर खरीद के लिये एक मजबूत व्यवस्था बनानी होगी। ऐसे में धान की खेती के लिये किसानों को हतोत्साहित करने से जमीनी स्तर पर बड़ा बदलाव आ सकता है।

प्रियंका की चुनावी सियासत का आगाज

डॉ. दीपक पाचपोर

यदि वायनाड में होने जा रहे उपचुनाव में प्रियंका जीत जाती हैं तो वे परिवार की तीसरी मौजूदा सांसद होंगी। वे बेशक गांधी परिवार की सदस्य हैं, लेकिन उन्होंने पिछले कुछ वर्षों से चुनावी प्रबंधन में अपनी कुशलता का परिचय दिया है।

अपने बड़े भाई राहुल गांधी की केरल के वायनाड की छोड़ी लोकसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिये प्रियंका गांध ी–वाड्रा ने बुधवार को परचा भरकर अपनी चुनावी राजनीति की शुरुआत कर दी है। परिवारवाद को लेकर भारतीय जनता पार्टी को एक और हमले का अवसर देते हुए कांग्रेस ने प्रियंका को मैदान में उतारा तो है, लेकिन राजनीतिक विश्लेषक प्रियंका का पलड़ा इस कदर भारी बतला रहे हैं कि भारतीय संसद पहली बार एक नहीं, दो नहीं बल्कि गांधी–नेहरू परिवार के तीन सदस्यों को एक साथ देखने जा रही है। राहुल ने 2024 का आम चुनाव वायनाड के साथ रायबरेली से लड़ा था। दोनों सीटों पर जीतने के बाद उन्होंने वायनाड की सीट छोड़ दी जहां से वे 2019 में भी निर्वाचित हुए थे। उस बार भी वे दो जगहों से चुनाव लड़े थे। दूसरा लोकसभा क्षेत्र अमेठी था, जहां उन्हें स्मृति ईरानी ने हराया था। 1998 से रायबरेली का प्रतिनिधित्व कर रही उनकी मां सोनिया गांधी इस साल हुए चुनाव में खड़ी नहीं हुईं परन्तु उन्हें पार्टी ने राज्यसभा में भेजा है। यदि वायनाड में होने जा रहे उपचुनाव में प्रियंका जीत जाती हैं तो वे परिवार की तीसरी मौजूदा सांसद होंगी। वे बेशक गांधी परिवार की सदस्य हैं, लेकिन उन्होंने पिछले कुछ वर्षों से चुनावी प्रबंधन में अपनी कुशलता का परिचय दिया है। आकर्षक व्यक्तित्व की धनी प्रियंका सड़कों पर संघर्ष करना जानती हैं, विमर्श रचती हैं, भाजपा के आरोपों का मुंहतोड़ जवाब देती हैं और मुद्दों को लेकर सरकार पर टूट पड़ती हैं। पिछले 5 वर्षों के दौरान पार्टी की बतौर महासचिव उन्होंने सबसे पहले उत्तर प्रदेश का जिम्मा सम्हाला। हालांकि 2019 के लोकसभा और 2022 के विध ानसभा चुनावों में उनके नेतृत्व में कांग्रेस को बहुत सफलता नहीं मिल सकी थी। इसके कारण काफी लोगों को लगने लगा था कि प्रियंका में वह बात नहीं है जिसकी उम्मीद थी। भाजपा के लिये यह विशेष संतोष की बात थी। नाकामी से विचलित हुए बिना प्रियंका ने अपनी लड़ाई का मुंह सड़कों की तरफ मोड़ दिया। महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार के साथ महिला सुरक्षा और उनके साथ होने वाले अत्याचारों को लेकर वे मुखर रहीं। उप्र में श्लडकी हूं, लड़ सकती हूंश का नारा चाहे विशेष कामयाब न हो पाया परन्तु उन्होंने प्रदेश में होने वाले बलात्कारों तथा उत्पीड़न के खिलाफ जोरदार आवाजें उठाईं। प्रशासन ने कई जगहों पर उन्हें जाने से रोकने की कोशिशें की थीं, पर वे हाथरस, उन्नाव आदि गयीं और अपनी कटिबद्धता व साहस का परिचय देती रहीं। ऐसा नहीं है कि उन्हें राजनीतिक समझ उनके पिता राजीव गांधी की तरह सक्रिय राजनीति में उतरने के बाद हुई। जब राजीव प्रधानमंत्री बने तो वे बहुत छोटी उम्र में उनके साथ पिता के चुनावी क्षेत्र अमेठी जाया करती थीं। उनके परिवार के प्रति लोगों के अनुराग को उन्होंने नजदीक से देखा था और उनमें देश के प्रति दायित्व की समझ कम उम्र में विकसित हो गयी थी। उन्होंने अपने भाई के साथ–साथ पहले दादी इंदिरा गांधी और बाद में राजीव की शहादत को भी देखा था। निराशा व नाराजगी के बावजूद उन्होंने देश के लिये परिवार के इन दो लोगों के त्याग का महत्व समझा। देश के प्रथम राजनीतिक परिवार की सदस्य होने के नाते सियासत का प्रशिक्षण उन्हें स्वाभाविकतः बचपन से ही मिलता गया। इसका लाभ लेते और उसका प्रदर्शन करते हुए प्रियंका लगातार सक्रिय रहीं। कर्नाटक, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, राजस्थान, मध्यप्रदेश, हरियाणा आदि राज्यों में उन्होंने जमकर चुनाव प्रचार किया। यह अलग बात है कि उनकी पार्टी को कहीं सफलता मिली तो कहीं असफलता, लेकिन उनके करिश्माई व्यक्तित्व के ज्यादातर लोग मुरीद होते गये। मौजूदा लोकसभा में यदि कांग्रेस की सदस्य संख्या लगभग दोगुनी हुई है तो उसमें राहुल एवं कांग्रेसाध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के साथ प्रियंका के भी योगदान से कोई इंकार नहीं कर सकता। वैसे प्रियंका का चुनावी प्रबन्धन का 35 वर्षों का अनुभव है– कभी अपनी मां सोनिया तो कभी राहुल के लिये। इस बार उन्होंने अमेठी में किशोरीलाल शर्मा को जीत दिलाई थी। पिछले दिनों राहुल द्वारा की गयी दो पदयात्राओं के दौरान जो विमर्श गढ़ा गया तथा जिसे लोकसभा में सांसद के तौर पर स्वयं राहुल व कांग्रेस ने बढ़ाया, उसे सड़कों पर प्रियंका ने मजबूती दी। राहुल जिस प्रकार महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, सामाजिक न्याय आदि की बातें उठाते रहे, उसमें अपना सशक्त स्वर प्रियंका ने मिलाया है। मोदी सरकार तथा देश के सबसे बड़े उद्योगपतियों के खिलाफ भी बेखौफ होकर प्रियंका ने अपनी रैलियों में आवाज उठाई। वायनाड सीट पर राहुल दो बार चुनाव जीत चुके हैं। उनका यहां अच्छा खासा प्रभाव है– बावजूद इसके कि वे यह सीट छोड़ चुके हैं। इसलिये प्रियंका जब यहां नामांकन भरने पहुंची तो उस मौके पर आयोजित रोड शो के रूप में जो जनसैलाब उमड़ा, उसने इस बात का आभास दे दिया है कि चुनावी परिणाम क्या होगा। प्रियंका की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि पिछले दिनों एक सभा में खुद राहुल ने कहा था कि श्यदि प्रियंका वाराणसी से चुनाव लड़तीं (2024 का), तो मोदी संसद में नहीं होते। वायनाड में राहुल की ताकत तो उनके साथ होगी ही, जिन्होंने 2019 में 4.1 लाख और 2024 में 3.64 लाख वोट पाये थे। प्रियंका यदि 13 नवम्बर को होने वाले उपचुनाव में (परिणाम 23 नवम्बर को) जीतकर लोकसभा पहुंचती हैं तो यह भाजपा, विशेषकर मोदी के लिये नयी मुसीबत होगी। जो मोदी–भाजपा अकेले राहुल के संसद के भीतर हमलों से पहले ही हलाकान हैं, भाई–बहन का दोहरा हमला कैसे झेलेंगे, यह देखना दिलचस्प होगा।

धर्मांधता के पागलपन का शिकार समाज

सर्वमित्रा सुरजन

लगभग दो–ढाई दशक पहले न्यूज चौनलों ने टीआरपी बढ़ाने और सबसे आगे बने रहने की दौड़ में जब नए–नए प्रयोग करने शुरु किए थे, तब करवा चौथ के मौके पर किसी चौनल ने व्रत करने वाली महिलाओं के लिए चांद की लाइव तस्वीरें दिखाई थीं। उसके बाद यह सिलसिला मैदान में उतरे बाकी चौनलों ने भी शुरु कर दिया। उस समय पत्रकारिता और मीडिया का ऐसा हाल देखकर आश्चर्य हुआ था कि आखिर हमारा समाज किस दिशा में आगे बढ़ रहा है, जिसमें पूजा, व्रत जैसी निहायत व्यक्तिगत बातें भी अब खबरों के कारोबार में इस्तेमाल हो रही हैं। उस दौर में एनडीए की सरकार थी. वाजपेयी जी प्रधानमंत्री थे, लालकृष्ण आडवानी की प्रध ानमंत्री बनने की हसरत थी और इंडिया शाइनिंग के नारे के साथ भाजपा को यकीन था कि भारत को चमकाने के नाम पर उसकी सियासत में चार चांद जरूर लगेंगे। बहरहाल, ऐसा नहीं हुआ, 2004 से 2014 तक यूपीए की सरकार रही। तब कांग्रेस के नेतृत्व में सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, मनरेगा, भोजन का अधिकार जैसे कई जनहितकारी फैसले भी आए। लेकिन अपने 10 सालों की सत्ता में कांग्रेस मीडिया के जरिए समाज में जहर भरने के दबे–छिपे एजेंडे को रोक पाने में नाकाम रही, बल्कि यह कहा जाए कि कांग्रेस समझ ही नहीं पाई कि उसकी नाक के नीचे दक्षिणपंथी ताकतें कैसा खेल कर रही हैं, तो शायद गलत नहीं होगा। कांग्रेस की इस नासमझी, नाकामयाबी और नजरंदाजी का खामियाजा अब देश भुगत रहा है। क्योंकि अब न्यूज चौनल करवा चौथ पर केवल चांद नहीं दिखा रहे, मेंहदी जिहाद के एजेंडे को भी चला रहे हैं। नरेन्द्र मोदी जब से सत्ता में आए हैं, तब से किस्म–किस्म के जिहाद देश में बताए जाने लगे हैं। ताजा मामला करवा चौथ पर लगाए जाने वाली मेंहदी से जुड़ा है। इस त्यौहार के मौके पर शहरों के व्यस्त बाजारों में फुटपाथ पर मेहंदी लगाने और लगवाने वालों की भीड़ आम बात है, कई सालों से ऐसा सिलसिला चल रहा है। लेकिन इस बार उप्र में कुछ जगहों पर दुर्गावाहिनी संगठन या इसी तरह के हिंदुत्ववादी संगठनों ने ऐलान किया कि हिंदुओं के इस धर्म में मेंहदी लगाने का काम मुस्लिम समुदाय के लोग नहीं करेंगे। सोशल मीडिया पर एक युवक का वीडियो भी वायरल हुआ, जो भरे बाजार में मुस्लिम लड़कियों को मेंहदी लगाने से रोक रहा था और गुंडागर्दी कर रहा था। इस तरह की खबरों को अगर प्रचारित–प्रसारित न किया जाए, तो ऐसे पागलपन को वहीं दबाया जा सकता है, लेकिन अगर मकसद पूरे देश को धर्मांधता के पागलखाने में तब्दील करना ही हो तो गीडिया की सेवाएं ली जाती हैं। इसलिए करवा चौथ पर चांद और पति की लंबी आयु के लिए पूजा करने वाली सुहागिनों की तस्वीरें, फिल्मी सितारों की करवा चौथ वाली पूजा के वीडियो के साथ–साथ अब मेंहदी जिहाद पर कार्यक्रम प्रसारित हो रहे हैं। हिंदू–मुसलमान के नाम पर दिन–रात बहसें कराकर अच्छे–भले लोगों का रक्तचाप बढ़ाने वाले एंकर संघ और भाजपा के एजेंडे को पूरा करने में लगे हैं। इस पागलपन में देश के एक बड़े तबके को शिकार बनाया जा रहा है, जिसके रोज नए उदाहरण सामने आ रहे हैं। दुर्गा विसर्जन के जुलूस में उप्र के बहराइच में दंगा भड़का जिसमें एक नौजवान की मौत हो गई। इसमें भी गलत खबरों को धड़ल्ले से प्रसारित किया गया। उस युवक की पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बारे में झूठी बातें फैलाई गईं और इसमें कई बड़े पत्रकारों और भाजपा नेताओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। हालांकि बहराइच पुलिस ने साफ कहा कि उस युवक को मारने से पहले यातनाएं देने की बात गलत है, ऐसा कुछ नहीं हुआ था। पुलिस की सफाई तो आ गई, लेकिन समाज में सांप्रदायिक जहर फैलाने वालों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। अगर होती तो शायद ऐसी कोशिशों पर थोड़ी रोक लगती। लेकिन बात वही है कि फिर भाजपा का मकसद पूरा करने का काम कौन करता। झारखंड में पिछले चुनाव में नरेन्द्र मोदी ने कपड़ों से पहचानने वाला बयान दिया था, अब वो बांग्लादेशी घुसपैठियों का मुद्दा इस आदिवासी बहुल राज्य में उठा रहे हैं। उधर बिहार के सीमांचल को भी यही डर दिखाकर केंद्र शासित प्रदेश घोषित करने की मांग उठी है। भाजपा सरकार में केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह हिंदू स्वाभिमान यात्रा निकालकर खुलेआम ध र्मनिरपेक्षता की अवहेलना कर रहे हैं और संविधान की शपथ का अपमान कर रहे हैं। दो दिन पहले राजस्थान में भाजपा विधायक बालमुकुंद बासबदनपुरा के शिया इमामगाह मस्जिद में घुस गए थे। उस वक्त नमाज के लिए बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे, उनकी इबादत में दखल देते हुए बालमुकुंद ने कहा कि यह देवस्थान है। उनके इस तरह पहुंचने से हंगामा मचा और पुलिस तक खबर पहुंची, लेकिन पुलिस के आने से पहले विधायक महोदय वहां से चले गए। इमामबाड़े के इमाम ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि विधायक ने उनके साथ बदतमीजी की, यहां तक कि वे इबादतगाह में जूते पहनकर घुस गए। अभी पिछले दिनों कर्नाटक की अदालत ने मस्जिद में जय श्रीराम के नारे लगाने को गलत नहीं माना था। अब देखना होगा कि भाजपा विधायक पर कोई कार्रवाई होती है या इसे भी भाजपा राज में गलत नहीं माना जाएगा, क्योंकि वे तो हिंदुत्व का परचम लहराने ही इमामबाड़ा पहुंचे थे। एक तरफ बटेंगे तो कटेंगे जैसे जुमले भाजपा उछाल रही है और सारे हिंदुओं को एकजुट करने के संघ सरसंचालक के निर्देशों पर अमल कर रही है और दूसरी तरफ हिंदुस्तान को अल्पसंख्यकों के लिए असुरक्षित देश बनाने में लगी है। इस खतरनाक एजेंडे की चपेट में जनता का एक बड़ा तबका पहले ही आ चुका है, अब न्यायपालिका, पुलिस प्रशासन, संसद और विध ानसभाओं में बैठे लोग, खेल, कला जगत, व्यापारिक संस्थान, मीडिया से जुड़े लोग भी बिना किसी लिहाज, पर्दादारी के बेझिझक इस एजेंडे को गर्व के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। उन्हें लगता है कि वे इस तरह अपने धर्म की सेवा कर रहे हैं, और इसी से देश की सेवा भी होगी। लेकिन असल में ये देश के खिलाफ भयानक षड्यंत्र में भागीदार बन रहे हैं। क्योंकि अब जिस तरफ निगाह दौड़ाइए, धर्म के नाम पर शक और नफरत से भरे लोग दिखाई देंगे, जिन्हें दूसरे धर्म के लोगों की खुशी से तकलीफ होती है और ये खुद तब खुश होते हैं, जब दूसरे पीड़ा में दिखाई दें। वैष्णव जन तो तेने कहिए रे, पीर पराई जाने रे, इस भजन के मायने हिंदू को जगाने वाले बेहूदा अभियान में गुम हो चुके हैं। राहुल गांधी के शब्दों में कह सकते हैं कि पूरे देश में केरोसिन छिड़क दिया गया है और चिंगारी लगने की देर है। अब ये चिंगारी बार–बार भड़कती हुई दिख रही है। दिल्ली की जामिया मिल्लिया इस्लामिया विवि में दीवाली उत्सव में रंगोली सजाने और दीयों के जलाने पर छात्रों के दो गुटों के बीच झड़प हो गई। आरोप है कि एक गुट रंगोली मिटाने और दीयों को बुझाने की कोशिश कर रहा था, जिसमें दोनों के बीच झड़प हुई। आरोप का सच और झूठ तो जांच का विषय है, लेकिन यह साफ दिख रहा है कि देश के शैक्षणिक संस्थानों में धर्मांधता के पागलपन का वायरस अच्छे से घुसा दिया गया है। होली, दीवाली, ईद, क्रिसमस बरसों–बरस शांति और सौहार्द के साथ मनाए जाते रहे हैं। ध र्मों को लेकर झगड़े भी होते रहे, लेकिन पूरा का पूरा समाज उनमें उलझा हुआ दिखाई नहीं दिया। मगर करवा चौथ का चांद दिखाने से लेकर मेहंदी जिहाद तक लाने के सफर में समाज को उलझाने की कोशिश कामयाब हो चुकी है। इसलिए प्रधानमंत्री और मुख्य न्यायाधीश का साथ आरती करना दिव्य घटना के समान लगता है। अयोध्या विवाद जैसे गंभीर मामले में फैसला लेने के लिए भी सीजेआई को भगवान के सामने बैठना पड़ा यह बात खुद उन्होंने कही है। फैसला तो हिंदुओं के पक्ष में आया और बाबरी मस्जिद तोड़ने वाले अब भी खुले ही घूम रहे हैं। लेकिन इस इंसाफ पर सवाल उठाने की गुंजाइश भी भगवान का नाम लेकर खत्म की गई है। धर्मांध ता की बीमारी के इलाज की उम्मीदें दिन ब दिन कम होती जा रही हैं। अब समाज सोचे कि वह इस पागलपन से खुद को अपनी भावी पीढ़ियों को कैसे बचाए, क्योंकि जिन लोगों ने ये बीमारी बढ़ाई है, उनके बच्चे बाहर पढ़–लिख कर बस रहे हैं और आपके बच्चे विदेश जाकर पढ़ना चाहें तो उसे बीमारी करार दिया जा रहा है। अब लोग शिक्षा या डिग्री जिहाद का जुमला सुनने के लिए भी तैयार रहें।

मणिपुर के लिए स्वीकार्य शांति फार्मूला तैयार करने में केंद्र की कठिनाई

रवींद्र नाथ सिन्हा

हमें सूप की कटोरी या चाय या कॉफी के कप के साथ सामाजिक मेलजोल करने में कोई हिचकिचाहट नहीं हैय लेकिन उसके बाद यह हमारे लिए श्इतनी ही दूरी और उसके आगे और कुछ भी नहींश है। हमारी अपनी पुरानी मांगें हैं और हम उन्हें पूरा करने के लिए दृढ़ हैंश, महत्वपूर्ण कुकी और नागा नेताओं ने संवाद को बताया, जब उनसे मंगलवार, 15 अक्टूबर को नई दिल्ली में केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा हिंसाग्रस्त मणिपुर में कुकी–जो–हमार, मैतेई और नागा समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले राज्य के विधायकों के साथ हुई बैठक के बारे में पूछा गया। बैठक पर मंत्रालय के संक्षिप्त बयान में इसे शांति की खोज कहा गया, लेकिन यह विवरण बहुत किफायती था। बयान में मुख्यमंत्री एनबीरेन सिंह की बैठक में अनुपस्थिति के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया। कुकी–जो–हमार, मैतेई और नागा विधायकों को एक साथ मिलना था, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। मंत्रालय को कुकी–जो–हमार विधायकों के लिए एक अलग बैठक के लिए सहमत होना पड़ा। इस प्रकार, यह केवल मैतेई और नागा विध ायकों की एक संयुक्त बैठक बन गयी। जानकार राजनीतिक हलकों के अनुसार, कुल 30 से अधिक भाजपा विधायकों में से 19 ने पार्टी के शीर्ष नेताओं से मांग की है कि मौजूदा मुख्यमंत्री को बदला जाये। उनमें से अधिकांश मैतेई विधायक हैं। इस संदर्भ को देखते हुए, पार्टी आलाकमान ने महसूस किया कि मुख्यमंत्री, जो मैतेई के प्रतिष्ठित नेता हैं, को बैठक से दूर रहना चाहिए। संयुक्त बैठक के संदर्भ में मंत्रालय के उद्देश्य के विपरीत अलग बैठक के बारे में पूछे जाने पर, कुकी नेताओं ने इस संवाददाता से कहा कि मैतेई प्रतिनिधियों के साथ भागीदारी का कोई सवाल ही नहीं था। बहुत लंबे समय से वे हमारे प्रति उदासीन रहे हैं। बहुत लंबे समय से वे हम पर हावी रहे हैं। दिलचस्प बात यह भी रही कि जब उन्हें बीरेन सिंह के खिलाफ 50 प्रतिशत से अधिक भाजपा विधायकों द्वारा विद्रोह के बारे में बताया गया, तो उन्होंने कहारू श्हमें कोई परेशानी नहीं हैय हमें मुख्यमंत्री पर कोई भरोसा नहीं है। वह हमेशा से हमें नजरअंदाज करते रहे हैं। पूर्वोत्तर के लिए केन्द्रीय मंत्रालय की ओर से वार्ताकार ए के मिश्रा के सामने एक कठिन काम है, यह मणिपुर में कुकी और नागा संगठनों के रुख से पता चलता है। कुकी नेशनल ऑर्गनाइजेशन और कुकी स्टूडेंट्स ऑर्गनाइजेशन से करीबी तौर पर जुड़े डॉ. सेलेनहाओकिप ने संवाद से कहारू श्हम केंद्र शासित प्रदेश की अपनी मांग पर अड़े हुए हैं, जिसका मैतेई बहुल इलाकों से प्रशासनिक तौर पर कोई लेना–देना नहीं होगा। विधायी तंत्र के साथ एक केंद्र शासित प्रदेश की व्यवस्था न्याय और प्रशासन और सरकार में हमारी सार्थक भूमिका सुनिश्चित करेगी। नागा लोगों का रुख बिल्कुल अलग है। उनके शीर्ष संगठन यूनाइटेड नागा काउंसिल ने समय–समय पर मैतेई बहुल इंफाल घाटी और कुकी–जो लोगों की अच्छी संख्या वाली पहाड़ियों में उन पर किये गये अत्याचारों को सूचीबद्ध किया है। यूएनसी ने मैतेई और कुकी–जो समुदायों से भी अनुरोध किया है कि वे इंफाल घाटी और परिधीय पहाड़ी क्षेत्रों में नागाओं, उनके आवासों और संपत्तियों पर हमला करने से खुद को रोकें। मैतेई, नागा और कुकी–जो मणिपुर के प्रमुख समुदाय हैं। 3 मार्च, 2023 को मैतेई और कुकी–जो के बीच जातीय संघर्ष शुरू होने के बाद से नागाओं ने तटस्थ रुख अपनाया है। उनका रुख स्पष्ट है। यूनाइटेड नागा काउंसिल के महासचिव वरेयोशात्सांग ने संवाद को बताया, केंद्र सरकार मैतेई और कुकी के बीच संघर्ष को सुलझाने का प्रयास कर रही हो सकती हैय उन्हें ऐसा करने दें। लेकिन, किसी भी परिस्थिति में हमारी जमीन, जो वास्तव में हमारी पैतृक जमीन है, उसे कुकी को देकर समझौता नहीं किया जाना चाहिए। साथ ही, हम मैतेई को एसटी का दर्जा देने के सख्त खिलाफ हैं। हम कुकी को स्वदेशी लोग नहीं मानते हैंय वे सालों पहले उस समय के बर्मा से आये थे, जो बाद में म्यांमार बन गया। यूएनसी के अध्यक्ष एनजी लोरहो ने पहले ही आधिकारिक तौर पर कहा था कि नागाओं के लिए प्राथमिकता अनुवर्ती कार्रवाई और 3 अगस्त, 2015 को नई दिल्ली के साथ हुए रूपरेखा समझौते का क्रियान्वयन है। लोरहो ने इस बात पर भी जोर दिया था कि वे कुकी या मैतेई के खिलाफ नहीं हैं। 15 अक्टूबर को नई दिल्ली में हुई बैठक के बारे में पूछे जाने पर शात्सांग ने सुझाव दिया कि केंद्र को अपने शांति प्रयासों में नागरिक समाज संगठनों (सीएसओ) और छात्र संगठनों को बड़े पैमाने पर शामिल करना चाहिए। मणिपुर के विधायकों की कोई विश्वसनीयता नहीं है। वे कानूनी तौर पर लोगों के प्रतिनिधि हो सकते हैं, लेकिन वास्तव में वे नहीं हैं। स्थापित सीएसओ में यूएनसी, मणिपुर अखंडता पर समन्वय समिति और कुकी इंपी का उल्लेख किया जा सकता है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल सैनिक स्कूल में इंटरहाउस चैम्पियनशिप के ध्वजारोहण समारोह में हुए शामिल

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल आज प्रात- सैनिक स्कूल रीवा में इंटरहाउस क्रास कंट्री चैम्पियनशिप 2024 के ध्वजारोहण कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं स्वयं भी ऊर्जावान महसूस कर रहा हूँ। प्राचार्य कर्नल अविनाश रावल के सौहार्दपूर्ण आमंत्रण पर मुझे यहां आने का सौभाग्य मिला। यहां आकर मैं गौरवान्वित एवं ऊर्जा से भरा हुआ महसूस कर रहा हूँ। उन्होंने छात्रों को चैम्पियनशिप में सफल होने की शुभकामना दी।

चोरहटा पुलिस की बड़ी कार्यवाही महाराष्ट्र के नागपुर से चोरी गई क्रेटा और किया सेल्टोस वाहन को घेराबंदी कर पकड़ा..

मणिपुर इंफाल के दो आरोपियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। जिले के चोरहटा थाना के नवागत थाना प्रभारी आशीष मिश्रा ने बड़ी कार्यवाही की है।सभी थाने की पुलिस को नागपुर महाराष्ट्र पुलिस द्वारा सूचना दी गई थी, कि अज्ञात बदमाशों द्वारा दो गाड़ियां कार क्रेटा ब्लैक कलर एवं चढ्ढ सेल्टास ब्लैक कलर को नागपुर से बीती रात्रि में दो अज्ञात बदमाश लेकर भागे हैं। अपने -अपने थाना क्षेत्र में नाकाबंदी कर पकड़वाने में सहयोग करें। सूचना पर गंभीरता दिखाते हुए चोरहटा थाना प्रभारी आशीष मिश्रा द्वारा चोरहटा बाईपास रोड में पुलिस स्टॉप के साथ नाकाबंदी कर बेला तरफ से आ रही

गाड़ियों की जांच पड़ताल शुरू कर दी। जिस दौरान बेला की ओर से आ रही ब्लैक क्रेटा गाड़ी को रुकवाकर पूछ ताछ की गई। गाड़ी में में सिर्फ एक व्यक्ति गाड़ी चालक था। चालक का नाम पूछने पर उसने अपना नाम अजीत सिंह बताया। साथ ही कुछ ही देर में दूसरी गाड़ी चढ्ढ सेल्टास भी बेला तरफ से ही आ रही थी। जिसे रायपुर कचुंलियान रीवा में नाकाबंदी करके पकड़ा गया। उस गाड़ी में भी केवल चालक था, जिसने अपना नाम बृजेंद्र सिंह बताया। दोनों चालकों से बारीकी से पूछताछ की गई तो दोनों ने बताया कि उनके द्वारा महाराष्ट्र के नागपुर से गाड़िया चुराई गई और गाड़ियों की नंबर प्लेट बदल दी गई। गाड़ियों की सही नंबर प्लेट गाड़ियों में ही पाई गई। चोरहटा पुलिस द्वारा इसकी सूचना नागपुर पुलिस को दी गई साथ ही दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर गाड़िया सहित थाना लाया गया। दोनो आरोप मणिपुर इंफाल के निवासी बताए गए है। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी चोरहटा आशीष मिश्रा मृगेंद्र सिंह, मनोज बागरी, रवि प्रताप सिंह एवं थाने के डायल 100 कर्मचारियों एवं साइबर सेल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

मिलावट से मुक्ति अभियान के अंतर्गत कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देश पर की गई कार्यवाही

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा।मिलावट से मुक्ति अभियान के अंतर्गत कलेक्टर प्रतिभा पाल के निर्देश पर तहसील क्षेत्रों में दूध से बने पदार्थों की जाँच हेतु ग्राम पथरी गढ़ तहसील त्योंथर स्थित मावा बनाने के कारख़ाने हरियाणा डेयरी मिल्क प्रॉडक्ट्स पर छापामार कार्रवाई की गई कार्रवाई के दौरान कारख़ाने में कैमिकल से सैफ़ोलाइट एवं कास्टिक सोडा डालकर नौ भट्टियों में व्यापक पैमाने पर खोवा तैयार किया जा रहा था इस मौक़े पर संचालक राहुल तिवारी नहीं पाए गए प्रभारी हरिकांत त्रिपाठी की मौजूदगी में कार्रवाई करते हुए नमूने जाँच हेतु भेजे गए है। टीम द्वारा पचामा स्थित मिष्ठान प्रतिष्ठान होम स्वीट से भी पनीर का नमूना जाँच हेतु लिया है। संपूर्ण कार्रवाई में खाद्य सुरक्षा प्रशासन से खाद्य सुरक्षा अधिकारी अमरीश दुबे एवं साबिर अली सम्मिलित रहे।

मिनर्वा द मेडिसिटी के संचालक डॉ. शिरीष मिश्र को विन्ध्य के उत्कृष्ट सम्मान से नवाजा गया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल के द्वारा मिनर्वा द मेडिसिटी स्पेशलिटी हॉस्पिटल में समस्त विभागों द्वारा उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाओं के लिए मिनर्वा द मेडिसिटी के संचालक, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. शिरीष मिश्र को विंध्य के उत्कृष्ट सम्मान से नवाजा गया।यह सम्मान न केवल डॉ. मिश्र के लिए, बल्कि संपूर्ण विंध्य क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण पल है। जो क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं की महत्ता को दर्शाता है। डॉ. शिरीश मिश्र की कड़ी मेहनत और समर्पण ने उन्हें इस प्रतिष्ठित सम्मान के लिए योग्य बनाया है। उनके नेतृत्व में मिनर्वा द मेडिसिटी ने उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने में एक नई मिसाल स्थापित की है।

इस सम्मान द्वारा क्षेत्रवासियों में स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और भविष्य में भी ऐसे ही प्रेरणादायक कार्य होते रहेंगे। विंध्य के लोगों के लिए यह गर्व का क्षण है कि उनके बीच ऐसा व्यक्ति है जिसने चिकित्सा के क्षेत्र में बेजोड़ योगदान दिया है। हम सभी इस उपलब्धि

कॉलेज में युवा उत्सव का समापनः-विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, तीन दिवसीय आयोजन का हुआ समापन

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। शहर के प्रतिष्ठित महाविद्यालय पेंटियम पॉइंट टेक्निकल कॉलेज के करहिया परिसर में तीन दिवसीय अन्तर-कक्षा महाविद्यालयीन स्तरीय युवा उत्सव कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत दिनांक 24 अक्टूबर को मंचासीन अतिथियों के द्वारा मां सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर की गई। इस मौके पर विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना और सांस्कृतिक गणेश वंदना की प्रस्तुति दी।कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के शैक्षणिक संचालक एसके त्रिपाठी ने की।उन्होंने कहा- युवा इस मंच के माध्यम से सृजनात्मक और ऊर्जा का विकास करेंगे। वहीं युवा उत्सव कार्यक्रम संयोजक डॉ राकेश तिवारी ने स्वागत भाषण दिया। इसके साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को युवा उत्सव के बारे में बताते हुए आगामी तीन दिवसों तक चलने वाले कार्यक्रमों की रुपरेखा के बारें में अवगत कराया,साथ ही जानकारी देते हुए बताया कि युवा उत्सव का उद्देश्य विद्यार्थियों को एक ऐसा सामूहिक अवसर एवं मंच प्रदान करना है। जो अपनी संगीत,कलात्मक,रूपांकन,रंग मंचीय एवं साहित्यिक क्षमता व प्रतिभाओं का प्रदर्शन कर सकेंगे।युवा उत्सव के प्रथम दिवस में रंगोली, वाद विवाद, भाषण प्रतियोगिता, एकल नृत्य, समूह नृत्य, एकांकी नाटक,

मूक अभिनय, हास्य नाटिका, मिमिक्री और प्रश्न मंच जैसी प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के दूसरे दिन एकल गायन की विभिन्न प्रतियोगिताऐं, समूह गायन,चित्रकला,कोला? , पोस्टर निर्माण,व्यंग्य चित्र निर्माण और मूर्ति शिल्प सहित अन्य प्रतियोगिता आयोजित हुई।युवा उत्सव का समापन 24 तारीख को पुरुस्कार वितरण के साथ होगा। युवा उत्सव में स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को जिलास्तर भाग लेने का मौका मिलेगा।आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के मुख्य प्रबंध संचालक बीएन त्रिपाठी, महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सीमा शुक्ला,मंचासीन थे। मुख्य अतिथि ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवा उत्सव जैसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को अपनी कला,संस्कृति और व्यक्तित्व को संवारने का बेहतरीन मंच प्रदान करते हैं। यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास की ओर पहला कदम हैं। इस उत्सव में प्रतिभागियों ने जिस उत्साह और समर्पण से हिस्सा लिया है, वह हमारे महाविद्यालय का गौरव ब?ाता है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।कार्यक्रम में विभिन्न विधाओं के प्रभारी तथा महाविद्यालय के छात्र उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल का लालगांव में किया गया नागरिक अभिनंदन

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि रीवा एवं विन्ध्य की जनता विकास के साथ है। लालगांव की ऐतिहासिक भूमि में मैं आपका अभिनंदन करने आया हूँ। यहां जो अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया है वह मेरे लिए नहीं वरन जनता जनार्दन के अभिनंदन के लिए आयोजित समारोह है। श्री शुक्ल ने कहा कि आपके द्वारा बनायी गयी सरकार आपके सर्वांगीण कल्याण के लिए पूरे मनोयोग से कार्य कर रही है। श्री शुक्ल का लालगांव में गजमाला से स्वागत करते हुए अभिनंदन पत्र सौंप कर सम्मान किया गया। स्व. रूकमणि रमणप्रताप सिंह सीएम राइज स्कूल प्रांगण में आयोजित नागरिक अभिनंदन समारोह को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रीवा जिले में बाणसागर की नहरों से सिंचाई के संसाधन उपलब्ध हो जाने से धरती से दौलत पैदा होने लगी है। आने वाले समय में जिले की एक-एक इंच भूमि सिंचित हो जायेगी और 9 हजार एक? क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो जायेंगी। श्री शुक्ल ने कहा कि वर्ष 2003 से पहले गांव अंधेरे में डूबे रहते थे, स?के नहीं थी तथा सिंचाई की सुविधायें भी नहीं थीं। 2003 के बाद प्रदेश के साथ-साथ विन्ध्य अंचल में भी विकास के पंख लग गये और हमारा जिला व विन्ध्य विकसित क्षेत्र के तौर पर जाना जाने लगा। श्री शुक्ल ने कहा कि मनगवां विधानसभा क्षेत्र के हिनौती गौधाम में गौअभयारण्य में 75 लाख के कार्यों के टेण्डर हो चुके हैं। आने वाले समय में 20 करो? रूपये से अधिक की राशि स्वीकृत कराकर इसका पूर्ण रूप से विकास किया जायेगा। अभयारण्य में लगभग 300 एक? राजस्व भूमि है तथा इससे लगे क्षेत्र में एक हजार एक? में वृक्ष लगाकर गौवंश के लिए अनुकूल स्थल की उपलब्धता सुनिश्चित करायी जायेगी। इस गौअभयारण्य को आर्थिक तौर पर सशक्त बनाकर आत्मनिर्भर बनाया जायेगा जो 25 हजार से अधिक गौवंशों का आश्रय स्थल होगा। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले एक वर्ष में प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में भी सभी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराकर प्रदेश को स्वास्थ्य के मापदण्ड में देश का अव्वल प्रदेश बनाया जायेगा। श्री शुक्ल ने मनगवां विधायक द्वारा प्रस्तुत सभी मांगों को पूर्ण कराये जाने का आश्वसन दिया। इससे पूर्व विधायक मनगवां इंजी. नरेन्द्र प्रजापति ने उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल को मनगवां विधानसभा में विकास व जनकल्याणकारी कार्यों के लिए साधुवाद दिया तथा क्षेत्र की विभिन्न मांगों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति को लाभ दिलाये जाने का कार्य प्राथमिकता से किया जा रहा है। पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी ने उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल द्वारा कराये जा रहे विकास कार्यों की चर्चा की तथा रीवा व विन्ध्य के अनेक विकासात्मक कार्यों के लिए श्री शुक्ल को साधुवाद दिया।कार्यक्रम के आयोजक धीरेन्द्र तिवारी धीरू ने स्वागत उद्बोधन देते हुए कहा कि यह अभिनंदन समारोह उप मुख्यमंत्री जी के सम्मान में गंगेव, लालगांव व आसपास के लोगों की मनोभावना को ध्यान में रखकर किया गया है। कार्यक्रम को अमित तिवारी ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर अध्यक्ष जिला पंचायत श्रीमती नीता कोल, अध्यक्ष नगर निगम रीवा व्यंकटेश पाण्डेय, अध्यक्ष जनपद गंगेव विकास तिवारी, जिला पंचायत सदस्य नंदिनी तिवारी, सुनील पाण्डेय, शंकर सिंह सहित ब?ी संख्या में लालगांव व आसपास के ग्रामीणजन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रवेश तिवारी ने किया तथा आभार प्रदर्शन सुनील पाण्डेय द्वारा किया गया।

उप मुख्यमंत्री ने क्रिकेट प्रतियोगिता का किया शुभारंभ - उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने लालगांव प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ किया।

नवीन ई रिक्शा कचरा वाहनों का विधायक द्वारा पूजन कर हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया

जीरापुर। नगर की सफाई व्यवस्था के सुचारू संचालन हेतु नगर परिषद जीरापुर द्वारा मैजिक कचरा वाहन के द्वारा प्रतिदिन नगर में डोर टू डोर कचरा संग्रहण किया

जाता है परंतु नगर की कुछ छोटी सकरी गलियों व मोहल्ले में मैजिक कचरा वाहन के ना पहुंच पाने के कारण ऐसी गली मोहल्लों से घर-घर से कचरा संग्रहण में होने वाली असुविधा को ध्यान में रखते हुए ऐसी छोटी गली मोहल्लों से भी घर-घर से आसानी से कचरा संग्रहण हो सके और नगर साफ व स्वच्छ बना रहे इसलिए नगर परिषद जीरापुर द्वारा चार नवीन ई रिक्शा कचरा वाहन क्रय किए गए दिनांक 25 अक्टूबर 2024 को नगर परिषद कार्यालय में विधायक हजारीलाल दांगी द्वारा इन चार नवीन ई रिक्शा का पूजन कर और हरी झंडी दिखाकर इन्हें रवाना किया गया नगर के नागरिकों एवं पुजारियों की मांग को ध्यान में रखते हुए इन चार ई रिक्शा में से एक ई रिक्शा केवल नगर के समस्त मंदिरों एवं पूजा स्थलों से निकलने वाली पूजन सामग्री एवं हार मालाओं के संग्रहण के कार्य के लिए आरक्षित रखा गया जो केवल इसी कार्य को करेगा अन्य कचरा संग्रहण में इस ई रिक्शा का प्रयोग नहीं होगा ई रिक्शा पूजन के अवसर पर कार्यालय में विधायक हजारीलाल दांगी, जिला प्रभारी सुरेंद्र शर्मा, पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष दिनेश पुरोहित, भाजपा जिला उपाध्यक्ष बलराम टांक, भाजपा जिला मंत्री ईश्वर सिंह तोमर, भाजपा मंडल अध्यक्ष विष्णु सिंह पवार, पूर्व मंडी अध्यक्ष कमल सिंह पवार, नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि पवन कुशवाह, पार्षद बंकट माहेश्वरी, सुनील हिंडोनिया, शंभूलाल वर्मा, मुकेश पुष्पद, कमल झावा, आदि जनप्रतिनिधि परिषद सदस्य गणमान्य नागरिक एवम कर्मचारी उपस्थित रहे नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि पवन कुशवाह द्वारा नगर के नागरिकों से अपने घरों से निकलने वाले कचरे को कचरा वाहन में डालने और नगर को साफ स्वच्छ बनाए रखने में नगर परिषद का सहयोग करने की अपील की।

आबकारी बेगमगंज द्वारा अवैध मदिरा के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही

आबकारी आयुक्त मध्य प्रदेश ग्वालियर द्वारा आदेशित अनुसार कलेक्टर महोदय श्री अरविन्द कुमार दुबे जिला रायसेन एवं सहायक आबकारी आयुक्त श्रीमती वंदना पाण्डेय, जिला रायसेन के निर्देशानुसार तथा सहायक

जिला आबकारी अधिकारी श्री सुदीप तोमर व सहायक जिला आबकारी अधिकारी श्रीमती सरिता चंदेल के नेतृत्व में आबकारी उपनिरीक्षक वृत्त बेगमगंज श्री रविन्द्र अहिरवार द्वारा मुखबिर सूचनाओं के आधार पर अवैध मदिरा विनिर्माण, संग्रहण, कब्जा व परिवहन के विरुध्द दिनाँक 24/10/2024 को ग्राम खैरी, मरेठी, चंदपुरा, परासिया, परतापगढ, ककरूआ, जसरथी, कीरतपुर, महुआ खेड़ा, बडगवां, कोकलपुर में छापामार कार्यवाई कर कुल 08 आपराधिक प्रकरण कायम किए गए आज की कार्यवाही में जप्त मदिरा देशी मदिरा मसाला एवं प्लेन 65 पाव, अंग्रेज़ी गोवा व्हिस्की कुल 28 पाव, 25 लीटर कच्ची एवं 750 द्यद् महुआ लाहन का बा?ार मूल्य रु करीबन 90,000/- आंकलित किया गया द्य आज की कार्यवाई में कुल 08 प्रकरणों में 04 आरोपी राजेश अहिरवार , भूरा अहिरवार , हेमराज ठाकुर , बृजेश ठाकुर मौके पर गिरफ्तार कर प्रकरण कायम किया द्य 04 प्रकरण अज्ञात के विरुद्ध कायम किए जिनकी तलाश जारी है। उक्त कार्यवाही में आबकारी मुख्य आरक्षक श्री निजाम खान , एवं नगर सैनिको अजय राजपूत, कमलेश शर्मा का महत्वपूर्ण सहयोग रहा । क्षेत्र में निरंतर भ्रमण / गश्त कार्य जारी है अवैध मदिरा के विरुद्ध सतत कड़ी कार्रवाई जारी रहेगी।

थाना घट्टिया पुलिस ने 15 लीटर अवैध जहरीली शराब के साथ आरोपी को किया गिरफ्तार

घट्टिया - पुलिस अधीक्षक प्रदीप शर्मा के निर्देशानुसार अति. पुलिस अधीक्षक शहर (पश्चिम) गुरुप्रसाद पाराशर व उप पुलिस अधीक्षक भारतसिंह यादव के कुशल मार्गदर्शन में थाना घट्टिया पुलिस टीम के द्वारा थाना घट्टिया क्षेत्र के ग्राम पिपलई आगर उज्जैन रोड पानबिहार फंटे से करण पिता राजेन्द्र उर्फ बाडां हाडा जाति कंजर उम्र 30 साल निवासी कंजर डेरा धतुरिया रोड ग्राम भैरवाखेडी थाना टोकखुर्द जिला देवास को 15 लीटर अवैध जहरीली शराब के साथ बिना नंबर की होण्डा साईन मोटर सायकल के साथ गिरफ्तार किया।

थाना प्रभारी शैलेंद्रसिंह अलावा ने बताया कि दिनांक 24.10.2024 को आरोपी करण पिता राजेन्द्र उर्फ बाडां हाडा जाति कंजर उम्र 30 साल निवासी कंजर डेरा धतुरिया रोड ग्राम भैरवाखेडी थाना टोकखुर्द जिला देवास का अपने साथी दिपक पिता मोतीलाल चौहान जाति कंजर निवासी टोंककला थाना टोकखुर्द जिला देवास के साथ ग्राम शराब अपनी बिना नंबर की होण्डा साईन

पानबिहार तरफ से कुप्पी मे भरी हूई अवैध मोटर सायकल से ग्राम पिपलई पानबिहार फंटे तरफ आने की सूचना मिलने पर पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुवे आगर उज्जैन रोड पानबिहार फंटा ग्राम पिपलई मे घेराबंदी की गई आरोपी करण कंजर को उसकी बिना नंबर होण्डा साईन मोटर सायकल सहित 15 लीटर अवैध जहरीली शराब के पकडा उसका साथी दिपक चौहान मोटर सायकल से उतरकर भाग गया आरोपियो के विरुद्ध अपराध क्रमांक 409/2024 धारा 49 (क) आबकारी एक्ट का पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया व आरोपी से मय मोटर साइकल सहित 15 लीटर अवैध जहरीली शराब जप्त की। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी उनि शैलेन्द्रसिंह अलावे,उनि अलकेश कुमार डांगे,सउनि.सुरसिंह बामनिया,प्रधान आरक्षक रविन्द्र मण्डलोई,शांतिलाल जाट,आरक्षक दीपक यादव,पवन शर्मा,सैनिक कमल बंजारा की मुख्य भुमिका रही।

व्यापारी संघ की कार्यकारिणी की हुई घोषित

कार्यकारिणी बनते ही व्यापारियों के हित में लिए कई निर्णय

मण्डलेश्वर (निप्र) नगर मंडलेश्वर के व्यापारी संघ अध्यक्ष भरत राठौड़ ने अपनी नई कार्यकारिणी की घोषणा की है जिसमें सचिव वीरेंद्र पाटीदार एवं कोषाध्यक्ष राम यादव व वरिष्ठ व्यापारियों की सहमति से कार्यकारिणी की घोषणा की गई जिसमें नगर व्यापारीसंघ के संरक्षक के रूप में ओमप्रकाश अग्रवाल , संतोष मोयदे , गणेश मामा पाटीदार , अनिल पाटीदार , एवं ब्रह्मदत्त चौहान वही सलाहकार अध्यक्ष अमरसिंह पटेल , शब्बीर हुसैन , समीर जैन , राजेश पंवार , को बनाया है । एवं उपाध्यक्ष के रूप में महेंद्र कुशवाह , सुनील पाटीदार , रवि पाटीदार , राहुल कुमरावत , गोपाल गुप्ता वही सहसचिव कमलेश पाटीदार , सलाहकार कोषाध्यक्ष राहुल केड़िया , सांस्कृतिक व क्रीड़ा प्रभारी गोलू मामा पाटीदार , लोकेंद्र कुमावत (लोकु) व व्यापारी संघ के मीडिया प्रभारी के रूप में नितिन जोशी , कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सुखदेव पटेल ,मनीष कुशवाह , राजा केवट , नितेश राठौर , पंकज आर्य , संयम जैन को कार्यकारणी सदस्य बनाया गया है।। कार्यकारणी बनते ही व्यापारी संघ व्यापारियों के व्यापार को ब?ाने हेतु दीपावली लकी ड्रा कूपन योजना लेकर आया है जिसमें दीपावली के पावन अवसर पर व्यापारीगण को लक्की ड्रा कूपन उपलब्ध करवा रहे है जो व्यापारी अपनी दुकान से खरीदी करने वाले ग्राहकों को लक्की ड्रा कूपन योजना के कार्ड उपलब्ध करा रहे है जिसमें ग्राहकों के लिए लाखों रुपए के आकर्षक उपहार रखे गए हैं जिसमें दो इलेक्ट्रिकल बाइक , पांच 32 इंच की एलइडी स्मार्ट टीवी , दस नग एंड्रॉइड 5त्न मोबाइल , दस नग इंडक्शन चूल्हा ,दस नग मिक्सर ग्राइंडर मशीन , दस नग छत पंखे , दस नग प्रेशर कुकर , दस नग इलेक्ट्रिक प्रेस , वही सौ नग दीवाल घड़ी रखी गई है। यह योजना 25 अक्टूबर 2024 से प्रारंभ होकर 10 दिसंबर 2024 तक चलेगी वही लकी ड्रा को 20 दिसंबर 2024 को शाम 5ः00 बजे नर्मदा घाट मंडलेश्वर पर निकाला जाएगा व लक्की ग्राहको को उपहार स्वरूप इनाम में खुलने वाली सामग्री दी जाएगी।! वही व्यापारी संघ के द्वारा वर्षो से चली आ रही एमजी रोड मुख्य बाजार में ट्रैफिक की समस्या को दूर करने के लिए एसडीएम अनिल जैन , एसडीओपी मनोहर गवली , नगर परिषद अध्यक्ष विश्वदीप मोयदे , सीएमओ शिवजी आर्य , थाना प्रभारी दीपक यादव के साथ सभी व्यापारियों की एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई गई जिसमें सभी व्यापारियों की सहमति से एमजी रोड मुख्य बाजार के मार्ग को एकांकी मार्ग बनाया गया जिससे आज ग्राहकों को आवागमन में समस्याएं नहीं आ रही है ।

वही व्यापारी संघ अध्यक्ष भरत राठौड़ ने कहा कि अपने व्यापारियों के हित के लिए वचनबद्ध हु। व्यापारियों के लिए आगामी समय में जो भी अच्छे निर्णय लिए जाएंगे वह सभी व्यापारी भाइयों की सहमति और आपसी सामंजस्य से ही लिए जाएंगे व्यापारियों के द्वारा व्यापारी संघ अध्यक्ष के द्वारा व्यापारीहित में लिए गए महत्वपूर्ण फैसले को लेकर व्यापारियों ने हर्ष जताया है वही नगर व्यापारी संघ की नवनिर्वाचित नवीन कार्यकारिणी को क्षेत्रीय विधायक राजकुमार मेव , भाजपा मंडल अध्यक्ष डॉक्टर देवेंद्र पाटीदार , नगर परिषद उपाध्यक्ष प्रतिनिधि हरि गाडगे , समाजसेवी रत्नदीप मोयदे , नगर परिषद ब्रांड एंबेसडर यशवंत तंवर , चंचल अग्रवाल , निलेश जैन , राजेश अग्रवाल , गोपाल सोनी , पीयूष अग्रवाल , आशीष गुप्ता , संतोष चौहान , कुलदीप पटेल , दिलीप पाटीदार , मनोज कुमरावत , भूपेंद्र चौहान , पुरुषोत्तम चौहान , मनीष राठौर , शंकर पाटीदार , हेमेंद्र जैन , मंडल उपाध्यक्ष दीपक ठाकुर , सीताराम ठाकुर , मंडल महामंत्री संदीप हिरवे ,सहित सैक?ों गणमान्य नागरिको ने शुभकामनाएं बधाई प्रेषित करते हुए व्यापारी संघ के द्वारा किए जा रहे कार्यो की सराहना की।।

भुगर्भिय से होने वाली तीव्रता की कंपन से कांपे मकान दुकान लोगों को लग रही क्षेत्र में अनहोनी की शंका

बरखेड़ी बाजार में ही क्यों भुगर्भिय हलचल के झटके पर झटके

जगोटी। जगोटी उज्जैन जिले की महिदपुर तहसील क्षेत्र के गांव

बरखेड़ी बाजार और जगोटी में गुरुवार को शाम करीब 4 बजकर 13 मिनट पर एक साथ दो तीव्रता से कंपन हुआ जिससे गांव में मकान और दुकान कांप उठे लोग एक बार फिर अपने मकान दुकान से बाहर निकल आए उन्होंने गुरुवार को हुए भुगर्भिय हलचल के कंपन को और अधिक तीव्रता से महसूस किया कंपन की तीव्रता इतनी तेज थी कि किसी ने पास में कोई मकान गिरने का अंदाजा लगाया तो किसी ने बड़े वाहनों का टायर फटना लेकिन जब बाहर आकर देखा तो ऐसा कुछ भी नजर नहीं आया इसके बाद लोगों में एक बार फिर से भुंकप के झटके की दहशत बैठ गई ग्रामीण लोगों का कहना है कि शासन प्रशासन को जगोटी बरखेड़ी बाजार गांव के क्षेत्र में हो रही इस प्रकार की घटना के मामले को गंभीरता से विचार कर पुर्ण रुप से जांच होनी चाहिए वहीं दोनों गांवों में करीब तीन सालों से इस प्रकार की हो रही घटना से ग्रामीणों में दहशत के साथ अनहोनी की आशंकाएं सता रही है वहीं गांव बरखेड़ी बाजार के गांव में भूकम्प जैसे झटके को लेकर अंबाराम पटेल नंदू चौहान अर्जुन डाबी रामचंद्र जितेन्द्र चौहान और जगोटी के राहुल रवि वर्मा आजाद जनपद सदस्य जगदीश पंवार प्रेम कटारिया धर्मेंद्र आदि लोगों का यह भी कहना है कि यह सब आखिर इन दोनों गांवों में ही क्यों हो रहा है शासन प्रशासन स्पेषट रुप से यहां गांव में रुक कर क्यों नहीं जांच करती है जिससे गांव में हो रही भुगर्भिय हलचल घटना की वास्तविकता से जांच हो सके।

नगर परिषद ने की फटाखा दुकानें आवंटित सुरक्षा मापदंड पूरे करना आवश्यक

मण्डलेश्वर(निप्र) दीपावली पर नगर में 13 पटाखा दुकानें सजेगी

गुरुवार को नगर परिषद में पटाखा व्यापारियों की एक बैठक आयोजित की गई जिसमें नगर परिषद अध्यक्ष विश्वदीप मोयदे कार्यपालिक दंडाधिकारी प्रदीप सिंगलू सी एम ओ शिवजी आर्य एवं टी आई दीपक यादव ने पटाखा व्यापारियों को सुरक्षा सम्बंधित निर्देश दिए। इसके बाद स्कूल मैदान पर नगर परिषद द्वारा व्यापारियों को दुकान लगाने के लिए जमीन आवंटित की।जहां नगर परिषद अध्यक्ष ने व्यापारियों के साथ दुकानों के लिए आवंटित जमीन का पूजन कर व्यापारियों को शुभकामनाएं प्रेषित की।व्यापारियों से चर्चा के दौरान अध्यक्ष ने व्यापारियों से सुरक्षा मापदंड पूरे करने की अपील करते हुए कहा कि दुकानों के बीच इस बार 15 फीट दूरी के नियम का पालन जरूर किया जाय साथ ही पानी का टैंक रेत से भरी बाल्टियां और फायर एक्सटीमेटर आवश्यक रूप से रखें। किसी भी हालत में सुरक्षा मानकों का उलंघन मान्य नही होगा।नगर परिषद का एक टैंकर और फायर फाइटर वाहन भी यहाँ तैनात किया जाएगा। इस अवसर नगर परिषद के राजस्व निरीक्षक कैलाश वर्मा सहायक दरोगा शैलेन्द्र गोहर पटाखा व्यापारी महादेव पाटीदार अनिल सोनी रमी? शेख योगेश सोनी दीपक कनेरिया इकरार शेख मनोज राठौड राहुल कुशवाह एवं विशाल सोनी उपस्थित थे।

जिला कांग्रेस कमेटी अनूपपर के अध्यक्ष पद के लिए मयंक त्रिपाठी पर कांग्रेशी कार्यकर्ताओं का विश्वाश अटूट

कांग्रेस जिला संगठन मंत्री समेत 6 मंडलम 3 पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष यूथ कांग्रेस के विधान सभा अध्यक्ष पार्षद सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने मयंक त्रिपाठी के नाम पर जताया भरोसा

ूपपुर। कांग्रेस के जिला अध्यक्ष के लिए जिले भर में दिग्गज हाथ पैर मार रहे उम्मीदवार अपने पक्ष और समर्थन की बात प्रदेश के आला कमान के समक्ष रख रहे हैं ,वही 17 साल से लगातार कांग्रेस में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते हुए एन एस यू आई, युवक कांग्रेस और जिला कांग्रेस के महत्वपूर्ण पदों पर तन मन धन से लगे रहे युवा कर्मठ नेता मयंक त्रिपाठी पर जिले के सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ताओं का विश्वाश है कार्यकर्ताओं ने बताया कि जैसे अन्य भूमिकाओं का निर्वहन मयंक त्रिपाठी ने कर्मठता से निभाया वैसे ही कांग्रेस के जिला अध्यक्ष बनने के बाद जिले में कांग्रेस को सर्वाधिक मजबूती प्रदान करे और सशक्त करेंगे , उनकी संगठनात्मक सोच ,सद्भाव और सभी से आपसी ताल मेल हर वर्ग से प्रेम एवं व्यवहार उन्हें कांग्रेस के जिला अध्यक्ष के मानकों पर खरा उतारता है। कांग्रेस प्रदेश हाइ कमान कर रही विचार मयंक त्रिपाठी का लगभग नाम तय । अनूपपुर जिले कि कांग्रेस की सभी कार्यक्रमों में तन मन धन से अपनी सक्रिय रखने वाले महेंद्र त्रिपाठी कांग्रेस के विभिन्न पदों में सक्रियता से अपनी

भूमिका का निर्माण किया जिसको देखते हुए हाई कमान भी इस बार संगठन में कर्मठ एवं जुझारू व्यक्ति को जिले की कमान सौंपने का विचार कर रहे वही कहीं ना कही प्रदेश कांग्रेस के शीर्ष नेताओं से उनके संबंध भी अच्छे है और शीर्ष नेता उनकी जागरूकता और कार्य कुशलता से परिचित हैं। देखना होगा कि इस बार जिला अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद किसके हाथों जाता है।

मयंक त्रिपाठी पर जिले की कमान संभालने विश्वाश जताने वाले कांग्रेस के कर्मठ एवं वरिष्ठ नेता यह हैं-*मनोज मिश्र जिला संगठन मंत्री , राम अग्रवाल पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष , राम खेलावन राठौर पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष , बाबा खान पूर्व पार्षद ,राघवेंद्र पटेल विधान सभा अध्यक्ष यूथ कांग्रेस चंद्र शेखर यादव मंडलम अध्यक्ष कांसा ,मनीष भोजवानी मंडलम अध्यक्ष सामतपुर निरंजन सिंह मंडलम अध्यक्ष अनूपपुर ,भूरा यादव मजदूर कांग्रेस ,वैद्यक पटेल , शैलेन्द्र सिंह ब्लॉक अध्यक्ष जैतहरी , शर्मा जी ,अहसान अली सेवा दल अध्यक्ष , जीवेंद्र सिंह पूर्व नगर पालिका उपाध्यक्ष , मान सिंह ,गुलाब पटेल मंडलम अध्यक्ष पिपरिया, संजय कोल सरपंच , प्रवीण सिंह धीरोल उप सरपंच ,नवीन पांडे मंडलम अध्यक्ष, गुड्डा सोनी वरिष्ठ कांग्रेसी सत्यम पटेल ,पुरुषोत्तम कुशवाहा सेक्टर अध्यक्ष समर्थन में मुख्य रूप से शामिल हैं।*

म.प्र. विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर आज भिंड आएंगे

श्री खाटू श्याम भजन संध्या एवं प्रतिभा सम्मान समारोह में होंगे मुख्य अतिथि

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड। मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर अपने निर्धारित एक दिवसीय प्रवास कार्यक्रम के तहत जिला भिंड में 27 अक्टूबर रविवार को आएंगे जहां अनेक सामाजिक कार्यक्रमों में इस शिरकत करेंगे। उनके साथ मध्य प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री राकेश शुक्ला विधायक,नरेंद्र सिंह कुशवाह भाजपा जिला अध्यक्ष देवेंद्र सिंह नरवरिया एवं पार्टी के वरिष्ठ नेतागण शामिल होंगे। भाजपा मीडिया सेंटर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष

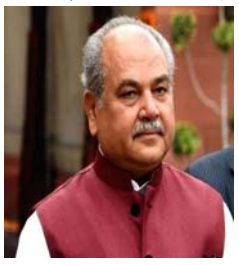

नरेंद्र सिंह तोमर अपने निर्धारित कार्यक्रम से के तहत मुरैना की सीमा पोरसा से दोपहर 2 बजे जिला मुख्यालय भिंड के लिए प्रस्थान करेंगे। अटेर विधानसभा क्षेत्र के, ग्राम पंचायत पारा मुड़ियाखेड़ा गढ़ूपुरा उदेतपुरा मिहोनी, मुड़िया खेड़ा रेलवे स्टेशन चंदनपुर शिव उत्सव वाटिका अटेर रोड की पुलिया बड़े हनुमान जी मंदिर बेटी बचाओ चौराहा होते हुए अग्रसेन चौक पर भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा फलों से तुलादान किया जाएगा विधानसभा अध्यक्ष तोमर का स्वागत बताशा बाजार भूता बाजार चौराहा पुस्तक बाजार चौराहा परेड चौराहा होते अहिंसा चौक खंड रोड होते हुए 4ः30 बजे श्री बद्री प्रसाद जी की बगिया में दैनिक भास्कर द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में शामिल होंगे उसके बाद श्री खाटू श्याम सेवा समिति द्वारा आयोजित शासकीय एमजेएस महाविद्यालय स्टेडियम में आयोजित भजन संध्या कार्यक्रम में शामिल होंगे।

चंदाहरा गांव में अज्ञात कारणों के चलते वृद्ध महिला ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

दैनिक पुष्पांजलि टुडे

गोहद- चंदाहरा गांव में शीला बाई पत्नी सुमन्त सिंह कुशवाहा उम्र 54 वर्ष निवासी चंदाहरा में अज्ञात कारणों के चलते अपने घर के पास पेड़ से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। जानकारी अनुसार चंदाहरा गांव में शीला बाई पत्नी सुमंत सिंह कुशवाहा उम्र 54 वर्ष ने अज्ञात कारणो के चलते फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी जिसकी सूचना गोहद पुलिस को लगी गोहद पुलिस ने मौके पर पहुंच कर मृतिका के शव को पेड़ से नीचे उतारा और गोहद अस्पताल लेकर गए।जहां शव का पोस्टमार्टम कराया और शव परिजनों को सोंपा पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच में लिया है।

विधवा महिला के साथ बेरहमी से लात घूसों से मार-पीट करने वाले पिता पुत्र को पुलिस ने किया गिरफ्तार

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

पाली। पाली थाना अंतर्गत ग्राम बछलापुर में कुछ दिनों पहले एक मामला हुआ था जिसमें बछलापुर गांव के दबंग पुत्र सचिन कुशवाहा और पिता गजराज कुशवाहा ने गांव की एक विधवा महिला के साथ बेरहमी से लात घूसों से जमीन पर पटक पटक मरा था जिसकी सूचना पीड़ति द्वारा पाली थाना में दी थी। पुलिस द्वारा पीड़ति को डाक्टरी के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बिरधा भेज दिया था पीड़ति की हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल भेज दिया था जहां उपचार जारी है। तो वहीं पाली पुलिस द्वारा दबंग सचिन कुशवाहा और गजराज कुशवाहा को गिरफ्तार कर लिया है। तो वहीं पाली थाना प्रभारी निरीक्षक उदयभान गौतम ने कहा कि पाली थाना क्षेत्र में कोई भी किसी भी प्रकार की घटना को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जो भी आरोपी होंगे चाहे कोई भी हो उन्हें तत्काल पड़कर जेल घुसने का काम पाली पुलिस करेगी।

ग्राम प्रधान पर कार्यवाही कब होगी -ग्राम बछलापुर में एक विधवा महिला के साथ गांव के दबंग पिता पुत्र ने बेरहमी से जमीन पर पटक पटक कर लात घूसों से पीटाई की थी पीड़ति परिवार द्वारा पाली थाना में शिकायत दर्ज कराई थी जिसको लेकर ग्राम प्रधान द्वारा पीड़ति महिला एवं परिजनों पर कार्यवाही न करने को लेकर दबाव बनाया जा रहा था। पीड़ति परिवार ने कहा कि ग्राम प्रधान पर भी कार्यवाही होनी चाहिए।

धनतेरस और दीपावली पर्व को लेकर पीस कमेटी की बैठक संपन्न

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट

पुष्पांजलि टुडे ललितपुरपाली। पाली थाना परिसर में धनतेरस और दीपावली पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न कराये जाने को लेकर पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई, बैठक की अध्यक्षता कर रहे उपजिलाधिकारी सैय्यद सानिया सोनम एजाज ने दिपावली पर्व को आपसी भाईचारे के साथ सादगी एवं शांतिपूर्ण तरीके से मनाने की अपील की । उपजिलाधिकारी ने कहा कि त्यौहार मिलजुल कर मनाने से इसकी खुशी और बढ़ जाती है। साथ ही कहा कि दीपावली खुशी प्यार और शांति का पर्व है। पवित्र मन और प्यार भरे माहौल में इसे मनाने से इसकी पवित्रता कायम रखी जा सकती है।प्रशासन त्यौहार को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने को लेकर प्रतिबद्ध है। त्यौहार के दौरान किसी प्रकार का भी अफवाह फैलाने वाले लोगों पर पुलिस कड़ी नजर रखेगी । पाली थाना प्रभारी निरीक्षक उदयभान गौतम ने कहा कि थाना क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखें जो भी व्यक्ति उत्पाद मचाता है तो उसकी सूचना तत्काल पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारियों को दें । अपने-अपने प्रतिष्ठानों पर सीसीटीवी कैमरे लगवाए एवं जिस किसी व्यापारी को सुरक्षा की जरूरत है उसके लिए प्लस तैयार है और जहां पर भी आगामी पर्व को लेकर जो भी कमी हो उसे त्योहार से पहले पूर्ण कर दी जाएं। तो वहीं पीस कमेटी बैठक में नगर पंचायत अध्यक्ष मनीष कुमार तिवारी ने कहा कि आगामी पर्व धनतेरस और दीपावली को लेकर नगर पंचायत के कर्मचारियों ने कमर कस ली है नगर के सभी वार्डन एवं गलियों में साफ सफाई व्यवस्था बना रखेंगे और जहां पर भी गंदगी है तो वहां की सूचना तत्काल नगर पंचायत पाली को दे नगर पंचायत पाली आपके द्वारा बताए गए सुझाव पर कार्य करती रहेगी और करती है। इस दौरान पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष नन्द किशोर सोनी,जय कुमार जैन, सुदामा साहू, जगदीश सोनी, अशोक सोनी, श्री राम राय, आजाद खां मंसूरी, राकेश पटेरिया, विमल कुशवाहा, ब्रिजेन्द्र रजक, हरगोविंद कुशवाहा, प्रवीण वर्मा, रानू दुबे, अरविन्द चौरसिया, प्रियंक जैन, मनोज चौरसिया, घनश्याम दास चौरसिया, हनीफ शाह, आशीष चौरसिया, रजनीकांत, चंद्रभान सिंह राजपूत, लालसिंह पूर्व प्रधान, जगदीश राय मोनू, रामनरेश, राजू परिहार सहित पाली थाना क्षेत्र के प्रधान, ब्यापारी,संभ्रांत लोग, समाजसेवीयो के साथ पत्रकार गण उपस्थित रहे।

खरगोन पुलिस द्वारा आदतन अपराधी (हिस्ट्रीशीटर/गुंडा) की परेड करवाकर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही की गई

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

आगामी त्योहारों के दृष्टिगत वरिष्ठ अधिकारियो के निर्देश पर अभियान के तहत चेक किया गुंडा बदमाशो कोशांति व्यवस्था बनाये रखने के उद्देश्य बदमाशो को दी गई हिदायतबदमाशो के विरुद्ध पृथक से की गई प्रतिबंधात्मक कार्यवाही।

*आगामी त्योहारों को दृष्टिगत रखते हुए श्रीमान पुलिस उप महानिरीक्षक निमाड़ रेंज खरगोन श्री सिद्धार्थ बहुगुणा सर एवं पुलिस अधीक्षक खरगोन श्री धर्मराज मीना जी द्वारा दिये गए निर्देशों के पालन में अनुविभागीय अधिकारी खरगोन श्री रोहित लखारे सर के मार्गदर्शन में पुलिस चौकी जैतापुर द्वारा कस्बा जैतापुर क्षेत्र

के आदतन अपराधी (हिस्ट्रीशीटर/गुंडा) को चौकी पर बुलाकर त्यौहार के समय किसी प्रकार का न्यूसेंस या गुंडागर्दी नही करने की हिदायत देकर चेकिंग परेड कराई गई। इसके अतिरिक्त सभी हिस्ट्रीशीटर/गुंडा के विरुद्ध पृथक से प्रतिबंधात्मक कार्यवाही कर प्रतिवेदन एसडीएम महोदय खरगोन की ओर प्रेषित किया गया।

कोविड में आपने माता-पिता को खो चुके बच्चों को कलेक्टर ने दिये उपहार

कोविड-19 महामारी के दौरान जिन बालको ने अपने माता-पिता को खो दिया है, उन बालकों को शासन की मुख्यमंत्री कोविड-19 बाल सेवा योजना एवं पीएम केयर योजनाओं से लाभांवित किया जा रहा है। कलेक्टर श्री कर्मवीर शर्मा द्वारा 26 अक्टूबर को कलेक्ट्रेट सभाग्रह में कोविड-19 महामारी के दौरान अपने माता-पिता को चुके उन बच्चों को दीपावली के शुभ अवसर पर उपहार भेट कर उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। इस दौरान उन्होंने बच्चों को पढाई के साथ-साथ रूची अनुसार खेलकुद में प्रतिभागी बनने के लिए प्रेरित किया। कलेक्टर श्री शर्मा ने बच्चों से कहा कि कोई भी समस्या होने पर बताये जिला प्रशासन उसके निराकरण के लिए तत्परता से प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती भारती आवस्या एवं सहायक संचालक सुश्री मोनिका बघेल उपस्थित रही।

दतिया आबकारी विभाग ने कच्ची शराब के विरुद्ध की बड़ी कार्यवाही कच्ची बेचने वालों हो जाओ सावधान आबकारी विभाग की सख्त नजर

संदीप प्रधान उप संपादक पुष्पांजलि टुडे

कलेक्टर दतिया श्री संदीप माकिन एवं उपायुक्त आबकारी संभागीय उड़नदस्ता श्री प्रमोद कुमार झा के निर्देशानुसार एवं जिला आबकारी अधिकारी दतिया श्री राकेश राणा के मार्गदर्शन में आबकारी कंट्रोल रूम प्रभारी दतिया श्री टी आर वर्मा द्वारा दतिया में अवैध शराब के विक्रय के विरुद्ध कार्यवाही की गई जिसमें नाले के पास गणेशखेड़ा, श्र.ह्य. जिगना पर 05 नीले ड्रमों में 1000 द्यद्द गुड लहान, तथा एक जरी केन में लगभग 20 बल्क लीटर हाथभट्टी मदिराको जब्त कर मध्य प्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1)क,च के अंतर्गत 01 प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। जप्त सामग्री का कुल अनुमानित मूल्य 1,04,000/- रुपए है।

उक्त कार्यवाही में आबकारी आरक्षक श्री संजय शर्मा, श्री रवि बिसारिया, श्री मनीष यादव, सुश्री याशनिका यादव एवं वाहन चालक श्री अजय गौतम का सराहनीय योगदान रहा।

डॉ.आकाश खैरा और डॉ.आकाँक्ष जैन ने 'टू स्टेज सर्जरी' कर बचाया युवक का पैर दुर्घटना में युवक के डैमेज पैर को दोबारा ठीक किया

उपलब्धि : ललितपुर में पहली बार हुआ ऐसा ऑपरेशन

अनुज सिंह ठाकुर ब्यूरो रिपोर्ट
पुष्पांजलि टुडे ललितपुर

ललितपुर। ललितपुर शहर अब दुर्लभ सर्जरी के लिये अनुकूल स्थान बनता जा रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुये एक दुर्घटना में अपने पैर का कचूमर बनवा चुके युवक की चिकित्सा विशेषज्ञों ने सफल 'टू स्टेज सर्जरी' कर दोबारा पैर को उपयोग लायक बना दिया है। मरीज का परिवार इस उपलब्धि पर बहुत प्रसन्न है।उत्तर प्रदेश के कन्नौज जिले के ग्राम बुदनी निवासी प्रवीण पाल श्रीश्याम कंपनी में काम करते है वह दक्षिण के तिरछी स्थान से रायपुर बरेली टायर लेकर जा रहे थे। तभी रास्ते में सडक दुर्घटना में उसका बायाँ पैर एक वाहन के टायर में फँसकर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। उसकी पाँच हड्डियाँ टूट गयी थीं। पैर के एक बड़े स्थान का माँस और खाल गायब हो चुका था। उसका खून बंद नहीं हो रहा था। घायल अवस्था में उसे ललितपुर मेडिकल कॉलेज लाया गया। जहाँ उसकी हालत को देखते हुये चिकित्सकों ने हाथ खड़े कर दिये। उसे तत्काल उचित इलाज की तत्काल आवश्यकता थी, जो उसे वहाँ नहीं मिल रही थी। तभी किसी ने उसे डॉ.आकाश खैरा के पास जाने की सलाह दी। वह बड़ी उम्मीद से ऋषिराज अस्पताल में भर्ती हो गया, जहाँ डॉ. आकाश खैरा ने पहली सर्जरी कर उसका खून बंद कर दिया एवं हड्डियों को के-वायर तार से जोडकर ठीक कर दिया। उसके इस प्राथमिक उपचार के दो दिन बाद उसकी दूसरी सर्जरी प्लान की गयी। जिसमें उसकी खाल और माँस का प्रत्यारोपण करना था। इसके लिये झाँसी के प्लास्टिक सर्जन डॉण्आकाँक्ष जैन ने आकर डॉ.खैरा से मिलकर इस कठिन कार्य को करने का फैसला लिया। अगले दिन डॉ.आकाश खैरा के निर्देशन में डॉ.आकाँक्ष जैन ने इस कार्य को बखूबी कर दिखाया और सफल ऑपरेशन कर प्रवीण के पैर को न सिर्फ बचा लिया, बल्कि उसे फिर से पहले जैसी हालत में ला दिया। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि से चिकित्सा जगत में हर्ष की लहर है। मरीज प्रवीण ने कहा कि वह इस सर्जरी से बहुत खुश है। उसकी जो सर्जरी हुयी है उसकी उसे ललितपुर जैसे छोटे शहर में इसकी उम्मीद ही नहीं थी। वह उसे नया जीवन देने वालों को बारम्बार साधुवाद दे रहा है। इस सर्जरी के दौरान डॉ.खैरा और डॉ.जैन के साथ चिश्चेतना विशेषज्ञ डॉ.खेमचंद वर्मा, डॉ.योगेश शर्मा, डॉ.विकास चौबे, सहायक अमित साहू, रोहित राजपूत, जाहर सिंह, सिस्टर सुषमा सेन, ओमकरन सिंह, वृगभान सिंह कुशवाहा का सहयोग रहा।

बुंदेलखंड मीडिया पत्रकार क्लब रजिस्ट्रेशन ने बनाई गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती कलम के सिपाही गणेश शंकर विद्यार्थी जी की जयंती पर किया नमन

तथ्यों के आधार पर निष्पक्ष पत्रकारिता करना कलमकारों की बड़ी जिम्मेदारी

पाली। मूर्धन्य पत्रकार एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी की जयंती धूमधाम पत्रकार हेड ऑफिस में धूमधाम से मनाई। इस दौरान क गणेश शंकर विद्यार्थी जी प्रतिमा पर कस्बे के पत्रकारों और गणमान्य नागरिकों ने पहुंचकर पुष्प अर्पित कर उनकी जयंती मनाई। इस दौरान अतिथियों ने उनके जीवन के बारे में बताते कहा कि गणेश शंकर विद्यार्थी जी का जन्म कायस्थ परिवार में 26 अक्टूबर , 1890 को अपनी नानी गंगा देवी के घर अतरसुइया प्रयागराज में हुआ था। 25 मार्च 1931 को 41 वर्ष की आयु में वह शहीद हो गये थे।

इस दौरान मौके पर उपस्थित पत्रकार जनों ने कहा कि गणेश शंकर विद्यार्थी एक निडर और निष्पक्ष पत्रकार, समाज-सेवी और स्वतंत्रता सेनानी थे। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में उनका नाम अजर-अमर है। गणेशशंकर विद्यार्थी एक ऐसे पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी लेखनी की ताकत से भारत में अंग्रेज़ी शासन की नींद उड़ा दी थी।महान स्वतंत्रता सेनानी ने कलम और वाणी के साथ-साथ महात्मा गांधी के अहिंसावादी विचारों और क्रांतिकारियों को समान रूप से समर्थन और सहयोग दिया। अपने छोटे जीवन-काल में उन्होंने उत्पीड़न क्रूर व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठाई। उन्होंने उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ में हमेशा आवाज़ बुलंद किया चाहे वो नौकरशाह, जमींदार, पूंजीपति या उच्च जाति का कोई इंसान हो।एक क्रांतिकारी पत्रकार और स्वाधीनता कर्मी के तौर पर अपना करियर प्रारंभ किया। पत्रकार पुरोधा विद्यार्थी जी ने क्रांतिकारी पत्रिका 'प्रताप' की स्थापना की और उत्पीड़न और अन्याय के खिलाफ आवाज़ बुलंद किया। प्रताप के माध्यम से उन्होंने पीड़ित किसानों, मिल मजदूरों और दबे-कुचले गरीबों के दुखों को उजागर किया। अपने क्रांतिकारी पत्रिकारिता के कारण उन्हें बहुत कष्ट झेलने पड़े। सरकार ने उनपर कई मुड़दमे किये, भरी जुर्माना लगाया और कई बार गिरफ्तार कर जेल भी भेजा। आजादी के आंदोलन में कलम के सिपाही विद्यार्थी जी का नाम अमर रहेगा। इस अवसर संरक्षक मंडल जाकर राज चौहान सच्चिदानंद गोलवानी रविंद्र दिवाकर वेद प्रकाश लिटोरिया अरविंद सेन अध्यक्ष अभिषेक बाजपेई मंत्री शिव प्रताप सिंह अनुज सिंह ठाकुर जावेद किरमानी फहीम बक्स इशराक खान नीटू नजीर वेग महेंद्र यादव कमलेश प्रजापति आदि पत्रकारगण उपस्थित रहे।

विवियन डीसेना

को चैनल का लाडला कहे जाने पर भड़कीं काम्या, कहा- उन्हें होगा नुकसान

बिग बॉस 18 में विवियन डीसेना काफी सुर्खियों में हैं। विवियन शो शक्ति में काम कर चुके हैं जिसमें काम्या पंजाबी भी लीड रोल में थी। काम्या बिग बॉस के हर सीजन को देखती हैं और उसे लेकर अपनी राय जरूर देती हैं। अब काम्या ने अपने को-स्टार रहे विवियन को लेकर कमेंट किया है। उन्होंने विवियन को लाडला कहे जाने पर बिग बॉस और बाकी कंटेस्टेंट्स पर निशाना साधा है। काम्या का कहना है कि इससे विवियन को ही नुकसान होगा।

विवियन को लेकर क्या बोलीं काम्या

काम्या ने ट्वीट किया, ये क्या है कलर्स का लाडलाऔर क्यों ये उन्हें ही बैकफायर करेगा। यहां कोई किसीका लाडला नहीं है। सिर्फ गेम है सब कुछ।

लोगों के रिएक्शन

काम्या के इस पोस्ट पर लोग खूब रिएक्ट कर रहे हैं। किसी ने कमेंट किया कि उन्हें पहले ही काफी इसका नुकसान झेलना पड़ रहा है। कई उनके खिलाफ जा रहे हैं। किसी ने लिखा कि लाडला बोलकर विवियन का गेम खराब किया जा रहा है।बता दें कि शक्ति शो में विवियन और काम्या के अलावा रुबीना दिलैक भी लीड रोल में थीं। रुबीना भी जब बिग बॉस में आई थीं तब काम्या ने उन्हें भी खूब सपोर्ट किया था। वहीं विवियन और रुबीना के बीच भी काफी अच्छा बॉन्ड है।

विवियन की चाहत से लड़ाई

फिलहाल शो की बात करें तो शो का एक प्रोमो सामने आया है जिसमें विवियन की कंबल को लेकर चाहत पांडे से लड़ाई हो जाती है। दरअसल, चाहत से गलती से विवियन के कंबल पर हल्दी लग जाती है। विवियन इससे गुस्सा हो जाते हैं और कहते हैं कि मेरी चीजों को मत छुआ करो। चाहत फिर उनसे बहस करती हैं तो विवियन कहते हैं कि इसका बस चले तो कोर्ट में जज से भी बहस करने लगे और उन्हें गलत साबित कर दे। वहीं चाहत कहती हैं कि मेरे साथ नेतागिरी नहीं चलेगी।

मुझपर डोरे मत डालो....चाहत पांडे के लिए ये क्या बोल गए अविनाश मिश्रा

बिग बॉस 18 से पहले भी चाहत पांडे और अविनाश मिश्रा एक दूसरे के साथ बतौर लीड काम कर चुके हैं. चाहत की मानें तो अविनाश को उनके रवैये की वजह से उनके सभी शो से बाहर कर दिया गया था. जिस तरह से बिग बॉस के घर के बाहर अविनाश और चाहत की नहीं बन रही थी, ठीक उसी तरह बिग बॉस के घर के अंदर भी दोनों एक दूसरे के खिलाफ बात करते हुए नजर आ रहे हैं. बिग बॉस के लेटेस्ट एपिसोड में जेल में लेटे हुए अविनाश पर चाहत पानी फेंकते हुए नजर आई. उनका कहना था कि रात को अविनाश ने उन्हें भूखा रखा और इसलिए उन्होंने उनसे इस बात का बदला लिया.

चाहत की ये हरकत देख अविनाश ने उनसे कहा कि वो 'गंवार' हैं. 'गंवार' शब्द सुनते ही चाहत उनपर भड़क गईं. उन्होंने कहा कि वो गांव से हैं इसलिए अविनाश उन्हें गंवार कह रहे हैं. चाहत ने इस शब्द का इस्तेमाल करने के लिए अविनाश की खूब क्लास लगाई. वो बोलीं,मैं गांव से हूं और इस बात का मुझे अभिमान है. आप मुझे गंवार कहते हुए नीचा दिखाने की कोशिश नहीं कर सकते. जब अविनाश ने चाहत की बातें सुनीं तब उन्होंने कहा कि चाहत एक विक्टिम कार्ड खेल रही हैं और वो चाहती हैं कि अविनाश उनसे झगड़ा करें ताकि वो भी लाइमलाइट में आए. अविनाश की इन बातों से बिग बॉस के घर में मौजूद उनकी दो सखियां ईशा सिंह और ऐलिस कौशिक सहमत नजर आईं.

बहक गए अविनाश मिश्रा

चाहत पांडे के रवैये से गुस्सा हुए अविनाश ने सभी घरवालों को उनके पास बुलाया. उन्होंने इन तमाम घरवालों के सामने कहा कि मैंने चाहत के साथ कई सालों से काम किया है. लेकिन कभी भी मैंने इन्हें कॉफी के लिए नहीं पूछा. चाहत पांडे को मेरा अटेंशन चाहिए, उन्होंने मुझपर पानी फेंका, क्योंकि उन्हें मुझे बिना कपड़े पहने हुए देखना है. लेकिन चाहत जी, मुझपर डोरे डालना बंद करो. आप किसी और के पास जाओ. आपको करणवीर भैया के बाइसेप्स पसंद हैं, तो उनके पीछे जाओ. लेकिन मुझे माफ करो. जिस तरह से सभी घरवालों के सामने अविनाश ने चाहत के साथ बदतमीजी की, वो देखकर करणवीर के साथ कई घरवाले उनपर भड़क गए.

रामायण में सीता बनने वाली मिस इंडिया निकिता पोरवाल ने रणवीर सिंह और संजय लीला भंसाली पर कही ये बात

मध्य प्रदेश की निकिता पोरवाल पिछले कई सालों से मुंबई में रह रही हैं. साल 2024 में हुई 60वीं फेमिना मिस इंडिया प्रतियोगिता में लगभग 2000 लडकियां शामिल हुईं थीं, इन 2000 लड़कियों में से 200 को शॉर्टलिस्ट किया गया. फिर 200 में से 24 आखिरी राउंड में शामिल हुईं. इन 24 कंटेस्टेंट में से सभी को पीछे छोड़कर 'मिस इंडिया वर्ल्ड 2024' का खिताब जीतना निकिता के लिए आसान नहीं था, लेकिन उन्होंने अपनी मेहनत के बलबूते पर ये मुमकिन कर दिखाया. हाल ही में टीवी9 हिंदी डिजिटल के साथ की बातचीत में निकिता ने अपने फ्यूचर प्लान्स को लेकर बात की.रिजल्ट के पहले बहुत हड़बड़ी थी, मन में डर था, उत्साह था. कुछ भी हो सकता था. अगले पल मेरी जिंदगी किस दिशा में मोड़ लेने वाली थी ये मुझे नहीं पता था, लेकिन हमेशा से मैं मध्य प्रदेश का नाम सुनना चाहती थी, क्योंकि फेमिना इंडिया के 60 साल के इतिहास में मध्य प्रदेश को कभी भी ये टाइटल नहीं मिला था. आखिरकार जब मैंने सुना कि निकिता पोरवाल मध्य प्रदेश से, तब मुझे बहुत खुशी हुई. फिर मैंने अपने मम्मी-पापा की तरफ देखा, पापा की आंखों में आंसू थे और मम्मी की आंखें बंद थीं.

आज निकिता मिस इंडिया वर्ल्ड बन गई हैं, लेकिन ये ताज जीतने से पहली वाली निकिता कैसी थीं ?

मैं हमेशा से एक ऐसी लड़की रही हूं, जो अपने सपनों के पीछे भागने से पहले जरा भी नहीं सोचती. अगर मैंने ठान लिया कि मुझे कोई चीज करनी है तो वो मैं करके ही रहती हूं. लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि मैं मेरी फैमिली से अलग रहती हूं. मुझे उनके साथ समय बिताना बहुत पसंद है. मैं अच्छा खाना बनाती हूं और मुझे परिवार के लिए खाना बनाना बेहद पसंद है. मैं पराठे बहुत अच्छे बनाती हूं. जब भी मैं घर जाती हूं मेरे घरवालों की डिमांड होती है कि मैं उनके लिए पराठे बनाऊं और मैं भी बड़ी ही खुशी से उनकी डिमांड पूरी करती हूं.मुझे कुत्ते बहुत पसंद हैं, मेरे घर में एक 12 साल का कुत्ता है, जिसे मैंने गोद लिया है और साथ ही, मैं मेरे घर के आस-पास के डॉग्स का भी मैं खयाल रखती हूं.

अब मिस वर्ल्ड के लिए आपको लगभग 2 साल इंतजार करना होगा, इस बीच अगर आपको कोई फिल्म ऑफर होती है तो आप क्या करेंगी ?

मुझे रंगमंच की सेवा करना पसंद है. थिएटर में मेरी जान बसती है. मैं पिछले 5 सालों से रामलीला में मां सीता का किरदार निभा रही हूं, वो मेरी जिंदगी का बहुत बड़ा हिस्सा है. लेकिन मेरे लिए अपने देश को वर्ल्ड में रिप्रेजेंट करना उससे भी ज्यादा जरूरी है. अगर कोई फिल्म मुझे ऑफर होती है तो मैं देखूंगी कि क्या मैं अपना शेड्यूल संभालते हुए उसे कर सकती हूं या नहीं, लेकिन मैं किसी भी तरह से मेरी मिस वर्ल्ड की तैयारी पर इसका असर नहीं होने दूंगी. मेरे लिए अपने देश का मिस वर्ल्ड जैसे प्लेटफॉर्म पर प्रतिनिधित्व करना सबसे जरूरी है फिलहाल, ये फिल्म या मेरे एक्टिंग करियर से ज्यादा जरूरी है .

अनन्या पांडे

की डेटिंग लाइफ पर मां भावना ने कही अपनी दिल की बात, कहा- मुझे लगता है वह....

अनन्या पांडे अपनी फिल्मों के अलावा अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर भी काफी चर्चा में रहती हैं। कुछ समय पहले तक उनका नाम आदित्य रॉय कपूर के साथ जुड़ा था। दोनों की साथ में वेकेशन की फोटोज भी वायरल हुई थीं। लेकिन फिर खबर आई कि दोनों ने ब्रेकअप कर लिया है। इसके बाद अन्नया का नाम वॉकर ब्लैंको के साथ जुड़ा। अब इस बीच अनन्या की मां भावना पांडे ने एक्ट्रेस की शादी को लेकर कमेंट किया है।

भावना से पूछा बेटी को लेकर सवाल

दरअसल, हाल ही में फैबुल्स लाइव्स ऑफ बॉलीवुड वाइव्स सीजन 3 में दिखाया गया कि भावना अपने कॉलेज में जाती हैं और इस दौरान बच्चे उनसे सवाल करते हैं। इसी दौरान एक बच्चे ने पूछा कि अनन्या का नाम कई लड़कों के साथ जुड़ता है तो वह मां होने के नाते इस सिचुएशन को कैसे हैंडल करती हैं।

अनन्या को लेकर क्या बोलीं

भावना कहती हैं, जब मैं यंग थी मेरा भी नाम कई लोगों के साथ जुड़ा बस हेडलाइन्स नहीं बनती थी। यही एक डिफ्रेंस है तो मुझे लगता है कि उन्हें अपनी लाइफ नॉर्मल जीनी चाहिए। जिस दिन वह डिसाइड करेंगी शादी का वह मुझे बता सकती हैं। उस दिन शायद मैं इमोशनल हो जाऊंगी। लेकिन तब तक मैं चाहती हूं वह अपनी लाइफ में अच्छा टाइम स्पेंड करें।

प्रोफेशनल लाइफ

अनन्या की प्रोफेशनल लाइफ की बात करें तो हाल ही में वह कंट्रोल में नजर आई हैं जो नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम हो रही है। इस सीरीज में उनके साथ विहान सामट अहम किरदार में हैं। अब अनन्या, करण जौहर की फिल्म में नजर आएंगी जिसका नाम अभी फाइनल नहीं हुआ है। हालांकि यह पता चला है कि इस फिल्म में उनके साथ अक्षय कुमार और आर माधवन होंगे।

प्रेस्टीज में चार दिवसीय वार्षिक महोत्सव स्पंदन-2024 का समापन

ग्वालियर। जहां एक और भारतीय संस्कृति की भावना एवं परंपरा से ओत-प्रोत भारत के विभिन्न प्रांतों के लोकनृत्य भारतीय संस्कृति की प्राचीनता एवं विभिन्नता का परिचय दे रहे थे। वहीं दूसरी और पाश्चात्य संस्कृति को नृत्य के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि पूरा सांस्कृतिक प्रोग्राम भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का संगम दिखाई दे रहा था। सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरूवात माँ सरस्वती की प्रार्थना एवं दीपक प्रज्वलित करके की गयी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. स्मिता सहस्त्रबुद्धे एवं सम्माननीय अतिथि के रूप में श्रीमती नीतु माथुर उपस्थित रही। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. स्मीता सहस्त्रबुद्धे का स्वागत डॉ. हरिओम अवस्थी द्वारा पुष्पगुच्छ देकर किया गया एवं अतिथि श्रीमती नीतु माथुर का स्वागत डॉ. के.के यादव द्वारा पुष्पगुच्छ देकर किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान के निदेशक डॉ निशांत जोशी ने कहा कि संस्थान सदैव ही छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिये प्रयासरत रहा है और इसी उद्देश्य को पूर्ण करने में संस्थान का वार्षिक महोत्सव ''स्पंदन'' प्रतिवर्ष प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान, ग्वालियर के द्वारा आयोजित किया जाता है। ''स्पंदन'' का आयोजन इसके अर्थ (हृदय की धड़कन) के अनुरूप ही विद्यार्थियों के उत्साहवर्धन एवं उनमे छिपी हुई प्रतिभाओं को निखारने के उद्देश्य से प्रेस्टीज प्रबंधन संस्थान, ग्वालियर द्वारा किया जाता है। इस उत्सव के दौरान समूचा माहौल आनंदमय एवं स्फूर्तिदायक बन जाता है। डॉ. तारिका सिंह, डेप्यूटी डायरेक्टर, प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान, ग्वालियर ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि इस सांस्कृतिक संध्या के सभी कार्यक्रमों एवं गत चार दिनो से चल रही विभिन्न स्पर्धाओं के आयोजन में महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं ने जिस प्रकार टीम भावना का परिचय देकर आपसी समन्वय के साथ आज स्पंदन-2024 के समापन को एक सफल एवं अविस्मरणीय पल के रूप में प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान, ग्वालियर की स्मारिका में शामिल कर दिया है, जो सदैव ही सराहा जाता रहेगा।

कार्यक्रम की शुरूवात सांस्कृतिक समन्वयिका मिस. कविता राणा ने अपनी प्रारंभिक उद्बोधन में कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा सभी अतिथिगणों के सामने रखी। उन्होंने जानकारी दी की आज की सांस्कृतिक संध्या में गणेश वंदना, भांगड़ा, गरबा वहीं पाश्चात्य संस्कृति की परिचायक नृत्य शैलियो जैसे- बॉलीवुड, फ्रीस स्टाईल एवं सालसा, डांस प्रस्तुत हुए। 10 से अधिक रगांरग प्रस्तुतियां दी गई 7 जिसमें 10 नृत्य प्रस्तुतियां प्रमुख रही। इसी कड़ी मे 3 ब्रांड एम्बेसडर राउंड भी आयोजित

किये गये जिनमें इण्डियन, स्पोर्ट्स एवं वेस्टर्न परिधानों को पहनकर महाविद्यालय के छात्र-छात्राओ ने रैम्प वॉक किया। इस सांस्कृतिक संध्या में महाविद्यालय के लगभग 350 से अधिक छात्र-छात्राओं ने प्रस्तुतियां दी। डॉ. स्मिता साहस्त्रबुद्धे (वाइस चांसलर, राजामानसिंह तोमर, म्यूजिक एवं आर्ट यूनिवर्सिटी) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रही। डॉ. सहस्त्रबुद्धे ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत एक युवा देश है और युवा इस देश की शक्ति है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में अकादमिक गतिविधियों के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हमेशा से ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। छात्र/छात्राओं द्वारा जितने भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये वे सभी वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से ओत-प्रोत थे। साथ ही उन्होंने प्रेस्टीज के छात्र-छात्राओं को शुभकामनायें दी एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।आज के कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित सम्माननीय अतिथि श्रीमती नीतु माथूर (सी.ई.ओ. स्मार्ट सिटी ग्वालियर) ने प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान ग्वालियर की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रेस्टीज एक ऐसा संस्थान है जो अपने नाम के अनुसार प्रबंधन की अनूठी मिसाल समूचे मध्य भारत में स्थापित कर चुका है। आज बहुत ही कम शिक्षण संस्थान ऐसे है जो महाविद्यालयीन स्तर पर सांस्कृतिक संध्या जैसे कार्यक्रमों का आयोजन इतनी शालीनता एवं परंपरा का निर्वाह कर पा रहे है। मैं प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान, ग्वालियर को उनके छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देती हूँ एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ। प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान के प्रागंण में आयोजित चार दिवसीय वार्षिक उत्सव स्पंदन-2024 का समापन एक सांस्कृतिक संध्या के साथ किया गया जिसमें मुख्य रूप से ग्वालियर शहर के सम्माननीय प्रबुद्धजन अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे।सांस्कृतिक संध्या में प्रेस्टीज प्रबंधन एवं शोध संस्थान के छात्र-छात्रों के द्वारा प्रस्तुत किये गये

मोहब्बत की दुकान सामाजिक संगठन की बैठक हुई

ग्वालियर। भितरवार सर्किट हाउस में मोहब्बत की दुकान सामाजिक संगठन की बैठक में एक शाखा का गठन किया गया। बैठक में संरक्षक पूर्व मंत्री बालेंद्र शुक्ला, संयोजक जिला कांग्रेस के ग्रामीण उपाध्यक्ष हाजी गब्बर पठान, महिला कांग्रेस की ब्लॉक अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बाथम, डॉक्टर गणेश जैन, ब्लॉक अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बाथम, लतीफ खान मल्लू, भोले पाल, सतीश मिश्रा, राजेश भदौरिया, धर्मेंद्र शर्मा, सुभाष गुप्ता, लोकेंद्र शर्मा, श्रीकांत धाकड़ नगरपाल, शुभांग दीक्षित एडवोकेट, रामसिंह रावत, डॉ गणेश जैन, अतुल जैन, राज खान, शकील खान, इमरान खान, श्रीमती पुष्पा भाई, श्रीमती राधाबाई भाई, श्रीमती अनीता बाई, श्रीमती भारती बाई, श्रीमती रजनी बाई आदि उपस्थित थे।

विक्रेता सहकारी समिति के लोकायुक्त का छापा, आय से अधिक संपत्ति मिली

सागर। लोकायुक्त पुलिस की नजर अब आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने वालों पर है। इसका उदाहरण शनिवार को उस समय देखने को मिला जब सागर लोकायुक्त ने विक्रेता सहकारी समिति धवा? के यहां छापामार कार्रवाई की। कार्रवाई के दौरान खबर लिखे जाने तक 213 प्रतिशत आय से अधिक संपत्ति मिली है। लोकायुक्त पुलिस ने विक्रेता सहकारी समिति धवाड़ को हिरासत में ले लिया है। पुलिस अधीक्षक लोकायुक्त सागर योगेश्वर शर्मा ने बताया कि उन्हें खबर मिली थी कि विक्रेता सहकारी समिति धवाड अरुण पुत्र शंकर लाल गुप्ता ने आय से अधिक संपत्ति जुटा रखी है। सूचना की तस्दीक करने के लिये लोकायुक्त टीम को लगाया गया। जब जांच में आय से अधिक संपत्ति सामने आई तो लोकायुक्त की टीम ने सुबह अचानक ग्राम धवा? तहसील रामनगर जिला छतरपुर में अरूण कुमार गुप्ता के निवास पर छापामार कार्रवाई की। अचानक हुई कार्रवाई से अरूण गुप्ता भी दंग रह गये। दिनभर चली जांच में अब तक लगभग 213 प्रतिशत आय से अधिक संपत्ति होने के प्रमाण मिले है। उनके घर पर विलासिता की सभी वस्तुएँ पायी गई। तलाशी के दौरान लोगों के हस्ताक्षरित खाली चेक पाये गये। वहीं 10 से अधिक रजिस्ट्रियां भी मिली हैं। जांच में प्रॉपर्टी में भी निवेश करने के प्रमाण मिले है। 20 से अधिक चेकबुक, पासबुक और 4 बैंक खातों की जानकारी मिली हैं। छापामार टीम में लोकायुक्त डीएसपी श्रीमती मंजू सिंह, निरीक्षक अभिषेक वर्मा एवं रणजीत सिंह शामिल थे। खबर लिखे जाने लोकायुक्त टीम की कार्रवाई जारी थी।

सिंधिया कन्या विद्यालय का स्थापना दिवस 28 अक्टूबर को, प्रियदर्शिनी राजे प्रेजिडेंट बोर्ड ऑफ गवर्नर बनी

ग्वालियर। सिंधिया कन्या विद्यालय का 68वां स्थापना दिवस समारोह 28 अक्टूबर को सायंकाल 5 बजे से आयोजित किया गया है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री मिलन शर्मा होगी। इस वर्ष स्वर्गीय राजामाता माधवीराजे सिंधिया के स्वर्गवास के बाद प्रेजिडेंट बोर्ड ऑफ गवर्नर प्रियदर्शिनी राजे सिंधिया को बनाया गया है। मीडिया प्रभारी श्रीमती वैशाली श्रीवास्तव ने बताया कि समारोह के दौरान एक प्रदर्शनी का उद्घाटन विद्यालय की हैड गर्ल मनस्वी मुद्गल के अभिभावकों द्वारा प्रातः 10.30 बजे किया जायेगा। साथ ही समारोह में आर्केस्ट्रा, वेस्टर्न बैंड, पेरेंटस क्विज, डांस वर्कशाप और गेम्स होंगे। समारोह के दौरान प्राचार्या श्रीमती निशी मिश्रा द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन की प्रस्तुति दी जायेगी। समारोह में सिंधिया कन्या विद्यालय की पूर्व छात्रा सुश्री मिलन शर्मा को विजयाराजे सिंधिया अवार्ड दिया जायेगा।

मध्य प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ का संभागीय सम्मेलन हुआ संपन्न पन्ना जिले की धरती को गौरांवित करने वाली प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

पन्ना जिले के प्रभारी मंत्री इंदर सिंह परमार की उपस्थिति में संपन्न हुआ भव्य समारोह,प्रतिभाओं के साथ-साथ पन्ना जिला सहित सागर संभाग से पधारे 200 पत्रकारों का हुआ सम्मान

संभागीय ब्यूरो गौरीशंकर कुशवाहा की पुष्पांजली टुडे की खबर

पन्ना - मध्य प्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ पन्ना जिला इकाई द्वारा आयोजित रतन गर्भा को गौरांवित करने वाली प्रतिभाओं का सम्मान एवं सागर संभाग का संभागीय सम्मेलन पन्ना जिले के पवई में भव्य रूप से संपन्न हुआ संगठन के प्रांत अध्यक्ष शलभ भदौरिया की विशेष उपस्थिति में मुख्य अतिथि के रूप में मध्य प्रदेश शासन के तकनीक शिक्षा मंत्री तथा पन्ना जिले के प्रभारी इंदर सिंह परमार सहित पूर्व मंत्री एवं पन्ना विधायक बृजेंद्र प्रताप सिंह, गुनौर विधायक राजेश वर्मा, पवई विधायक प्रहलाद लोधी, जिला पंचायत अध्यक्ष मीना राजे , पवई तथा गुन्नौर नगर परिषद अध्यक्ष, पन्ना कलेक्टर सुरेश कुमार पुलिस अधीक्षक साई कृष्ण थोटा की गरिमामई मौजूदगी में संपन्न हुआउपरोक्त समारोह एथलेटिक्स, गायन, विधि विधाई, शिक्षा, साहित्य, उत्कृष्ट लोक सेवक, प्रशासनिक सेवाओं में चयनित पन्ना जिले की प्रतिभाएं, ऐसे लोक सेवक जो आम जनमानस मैं निष्ठापूर्ण तरीके से सेवाएं दे रहे हो, तथा विभिन्न क्षेत्र की उत्कृष्ट प्रतिभाओं का सम्मान सम्मानित मंच से किया गया पन्ना जिले सहित सागर संभाग से पहुंचे लगभग 300 पत्रकारों का सम्मान भी सम्मानित मानचित्र किया गया7 इस कार्यक्रम मे देवेन्द्रनगर तहसील इकाई से वरिष्ठ पत्रकार के रूप मे श्यामकुमार तिवारी उ? विनोद तिवारी तहसील अध्यक्ष गौरीशंकर कुशवाहा, जिला उपाध्यक्ष सुरेंद्र प्रताप सिंह प्रियब्रत गौतम, अशोक विश्वकर्मा, जावेद खान, शैलेन्द्र भार्गव, सत्यम पाण्डेय, बुद्ध प्रकाश, अंकित मिश्रा, घनश्याम शर्मा, रमा शंकर तोमर, मनोज कुशवाहा, भूपेंद्र जायसवाल सहित अन्य पत्रकारों ने सिरकत दी7

आत्मा का मूल स्वभाव ही आनंद: पुण्डरीक महाराज गोविंदपुरी में श्रीमद्भागवत कथा का पांचवा दिन

ग्वालियर। जब तक जीवन में आनंद है, माया प्रवेश नहीं कर सकती है। आनंद का आशय मौज मस्ती नहीं है। आत्मा का मूल स्वभाव ही आनंद है। जीवन में बाह्य दृष्टि माया है और आत्मदृष्टि अध्यात्म है। यह विचार पुण्डरीक महाराज ने शनिवार को श्रीमद्भागवत कथा के पांचवे दिन गोविंदपुरी पार्क में व्यक्त किए। इस मौके पर गोवर्धन महाराज का सुंदर विग्रह बनाया गया, जिसके दर्शन कर भक्तों ने पुण्य लाभ अर्जित किया। उन्होंने कहा कि यदि आप सोने-चांदी और हीरे के आभूषण पहनते हैं तो यह प्रदर्शित होता है कि आपने धन कमाया है,लेकिन यदि आप तुलसी का माला पहनते हैं तो पता चलता है कि आपने धर्म कमाया है। तुलसी की माला आपको गलत काम करने से भी रोकती है। उन्होंने कहा कि तप सेवा सुमरिन के लिए भाव का पवित्र रहना जरूरी है। भगवान को दो भाव पसंद नहीं हैं। यदि आप लड्डू गोपाल की पूजा करते हो तो द्वारिकाधीश को मत पूजो और यदि आप द्वारिकाधीश को पूजते हो तो बालगोपाल को नहीं, क्योंकि भगवान को दो भाव रखने वाले पसंद नहीं है। उन्होंने कहा कि जन्म बंधन है,लेकिन भजन और गुरूकृपा के पंखों से जन्म जन्मों का बंधन खुल जाता है। कामना की पूर्ति से नहीं कामना की निवृत्ति से ही सुख मिलता है। उन्होंने

कहा कि पुत्री का जन्म भाग्य से होता है। पुत्री का जन्म से भाग्य बदल जाते हैं,लेकिन कई बार बेटी की विदाई के बाद सब कुछ हिल जाता है। गौमाता की कृपा भी भाग्य बदलती है। उसकी कृपा से कितने ही आश्रम चल रहे हैं। हम स्वयं भी गौकृपा से चल रहे हैं। भगवान गोपाल भी गाय से चले। इस मौके पर कथा परीक्षत रैनू विपिन शर्मा, मधु प्रदीप बोहरे, ममता रवि शर्मा, ममता गोस्वामी, शुभम गोस्वामी, मनोज श्रोत्रिय, रोहन दामिनी, रोहित बोहरे, अमित अदिति, रविशेखर, दीप्ति गौड सहित सैकड़ों श्रद्धालु मौजूद रहे। .....

डॉ नेहा मिश्रा को मिली डाक्टरेट की उपाधि

बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के 29 वे दीक्षांत समारोह में कोंच नगर के पत्रकार स्व. श्री सुरेंद्र मिश्रा (दैनिक भास्कर) की पुत्री डॉ. नेहा मिश्रा को प्रदेश की राज्यपाल माननीया श्रीमती आनंदी बेन पटेल के द्वारा विद्या वाचस्पति पीएचडी की उपाधि से विभूषित किया गया । डॉ नेहा मिश्रा ने बड़े संघर्ष के साथ अपने इस मुकाम को हासिल किया। उन्होंने म.प्र.सेट परीक्षा एवं नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर पीएचडी को भी पूर्ण किया कर लिया अपनी पीएचडी के दौरान डॉ नेहा मिश्रा ने गोरखपुर में जाकर गोरखनाथ मंदिर में प्रधान पुजारी बाबा कमलनाथ का साक्षात्कार लिया एवं प्रयागराज के कुंभ मेले में नाथ संप्रदाय के अखाड़े में जाकर डॉ विलास नाथ योगी जी से भेंट कर उनका भी साक्षात्कार लिया एवं नाथ संप्रदाय के विषय में गहन अध्ययन किया। डॉ नेहा मिश्रा से बातचीत में उन्होंने बताया कि उनकी पड़ाई में अनेक रुकावटें तो आई और जीवन संघर्षमय भी रहा परंतु उनके गुरुओं ने उस मार्ग को सुगम बनाया व उचित मार्गदर्शन दिया। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के संस्कृत शोध केन्द्र नेहरू महाविद्यालय ललितपुर से प्रो बी बी त्रिपाठी के निर्देशन में शोध कार्य सम्पन्न किया है , उन्होंने बताया कि उन्हें प्रो. ओम प्रकाश शास्त्री शोध केन्द्र निदेशक एवं प्राचार्य नेहरू महाविद्यालय ललितपुर, प्रो. मुरली मनोहर पाठक कुलपति लाल बहादुर शास्त्री संस्कृतविश्वविद्यालय, प्रो. ललित त्रिपाठी शोध निदेशक, गंगा नाथ झा संस्कृत संस्थान, प्रयागराज, प्रो. टी. आर. निरंजन पूर्व प्राचार्य मथुरा प्रसाद महाविद्यालय कोंच आदि व गुरुजनों का मार्गदर्शन एवं सान्निध्य प्राप्त हुआ। नेहा मिश्रा ने सभी को धन्यवाद दिया। अपनी पी.एचडी का श्रेय उन्होंने अपने पुत्र सानिध्य तथा अपनी माताजी एवं पिताजी को समर्पित किया।

गोहद के शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्र.2 में छात्र-छात्राओं के नेत्र शिविर का आयोजन किया

महेंद्र शर्मा उप संपादक पुष्पांजलि टुडे

गोहद भिंड विजन इंप्यारिंग रूप अदानी रूप द्वारा गोहद के शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 2 में छात्र-छात्राओं के नेत्र परीक्षण कैंप का आयोजन किया गया जिसमें विजन एपायरिंग अदानी रूप द्वारा समस्त छात्र-छात्राओं के नेत्रों का परीक्षण किया गया जिन छात्र-छात्राओं के लिए चश्मे की आवश्यकता थी उनके लिए निशुल्क चश्मे की व्यवस्था की जाएगी रूप के डॉक्टरों द्वारा जो कि ग्वालियर से आए हुए थे छात्र-छात्राओं का विभिन्न मशीनों के माध्यम से कैंप लगाकर नेत्र परीक्षण किया गया जिसमें 260 से अधिक छात्र-छात्राओं एवं विद्यालय परिवार के सदस्यों का नेत्र परीक्षण किया गया इसके साथ ही साथ विद्यालय परिवार के सदस्यों को नेत्र परीक्षण करने का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया पांच डॉक्टरों के इस रूप द्वारा प्रशिक्षण में सहज व्यवहार अपनाते हुए कार्य किया गया अंत में विद्यालय प्रधानाध्यापक को विजन एंबेसडर के रूप में सहयोग के लिए प्रशिक्षण कीट एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया इस अवसर पर शासकीय माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 2 के प्रधानाचार्य आचार्य बृजमोहन शर्मा क्रीड़ा भारती के अविंद शर्मा कमलेश राजोरिया विद्यालय परिवार के समस्त सदस्य सुनील सिंह रविंद्र सोनी श्याम सुंदर राठौर दिलीप अग्रवाल प्रिया सिंगल अंकित शर्मा सुरक्षा गार्ड प्रमोद ओम प्रकाश मेहर आकाश एवं विद्यालय परिवार के सहयोगी अभिभावक बंधु भी उपस्थित रहे

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478